1. विषय-वस्तु में नवीनता एवं आधुनिकता—वर्षों से चित्रित कांवड़ व पड़ चित्रांकन में पारम्परिक विषयों के अतिरिक्त समय की मांग के अनुसार चित्रण की विषय-वस्तु की सीमाओं में विस्तार होने लगा है। इनमें आधुनिक, सामाजिक, ऐतिहासिक विषयों के साथ-साथ रोमांचकारी विषयों के माध्यम से चित्रण में नवीनता और आधुनिकता का समावेश किया जाने लगा है। कांवड़ में मांगीलाल मिस्त्री व श्री सत्यनारायण जी सुथार ने महापुरुषों की जीवनियों का चित्रण करके सभी सम्प्रदाय में लोकप्रियता की ऊँचाइयों को छुआ। सत्यनारायण जी ने विदेशियों की मांग के अनुसार घटनाओं का चित्रण किया। कुछ कलाकारों ने गुरु नानक, ईसा मसीह, महावीर के अतिरिक्त 50 अन्य विषयों को कांवड़ पर चित्रित किया है। गुरुनानक की कांवड़ में जीवन के 47 प्रसंगों को चित्रित किया गया है। इसी प्रकार महावीर के जीवन के सभी प्रसंगों को चित्रित करने का प्रयास किया गया है। बालकृष्ण बसापती ने राजस्थान के महत्वपूर्ण त्योहारों व धार्मिक व्रत कथाओं पर भी कांवड़ बनायी, जिनमें दशामाता की कांवड़ काफी प्रसिद्ध है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी कांवड़ की भूमिका दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आधुनिक शिक्षा जगत में कांवड़ को माध्यम बनाया जा रहा है। सफल माध्यम बनाने हेतु शिक्षकों, ग्राम सेवकों, आंगनबाड़ी बहनों को प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया गया है। परिवार नियोजन, प्रौढ़ शिक्षा, अल्पबचत, नारू (रोग) उल्मूलन वालों ने प्रचार सामग्री के रूप में कांवड़ का उपयोग किया गया है। कृषि कॉलेजों में भी चूल्हा उन्मूलन, उन्नत फसल, खाद, बीज को लेकर कांवड़ पर प्रयोग किये गये है।

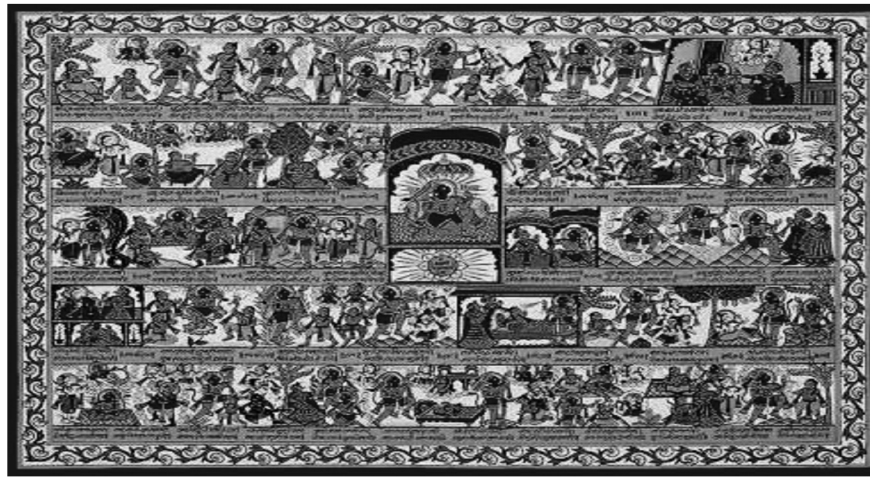

पड़ चित्रांकन में भी पारम्परिक विषयों के साथ-साथ अन्य विषयों जैसे आखेट दृश्य, फाग, दरबार का दृश्य, गाय, घोड़े आदि के झुंड, युद्ध का दृश्य, बारात का दृश्य आदि पर पड़ बनने लगी हैं। इन संक्षिप्त विषयों पर पड़ बनने से देखने वालों को तुष्टि प्राप्त होती है।[7] पाबूजी व देवनारायण जी की कथा की जानकारी न होने से जनसाधारण के लिए ग्राह्य नहीं हो पाती थी अत: चित्रकार अन्य सुप्रसिद्ध कथाओं पर भी चित्र बनाने लगे। शान्तिलाल जी ने भी पृथ्वीराज चौहान और हाडा रानी, अमिताभ बच्चन आदि पर भी पड़ बनाई है।[8] श्री लालजी जोशी के पुत्र कल्याण जोशी ने दशावतार, हनुमान चालीसा, समुंद्र मंथन, नवग्रह आदि विषयों पर पड़ चित्रण किया।[9] इनके अतिरिक्त रामायण,

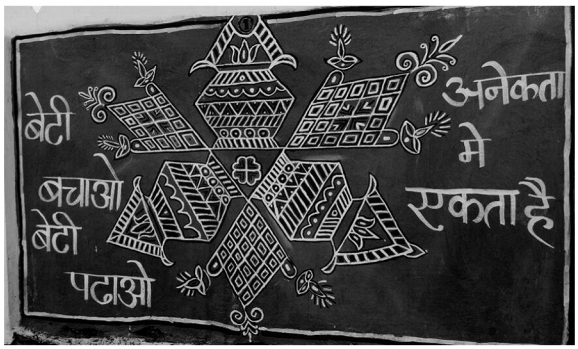

महाभारत, कृष्णलीला आदि की भी पड़े बनी। कुछ विशेष धर्म पर आधारित चित्र जैसे—भगवान श्री महावीर के जीवन पर भी पड़ बनी। हल्दीघाटी विषय पर भी चित्र प्रताप जयंती के अवसर पर बनाए गये। विदेशी लोगों की मांग पर रूसी क्रांति जे.एफ. कैनेडी पर आधारित घटनाओं पर भी पड़ चित्र बने। कुछ विदेशी लोगों ने ऊंट, हाथी, घोड़ों के स्थान पर साइकिल, रिक्शा, मोटर आदि को भी पड़ शैली में चित्रित कराया है।

माण्ड़नों विविधता इनकी सहज व उन्मुक्त अभिव्यक्ति का द्योतक है, इनमें लोक की कल्पना के भी दर्शन होते हैं। आधुनिक स्वरूप में प्रस्तुत करके कलाकार माण्ड़ना कला को जीवित रखे हुए हैं। आजकल आधुनिक विषय पर माण्ड़ने बनने से देखने वालों को तुष्टि एवं संदेश प्राप्त होता है।

2. चित्रफलक एवं आकार में नवीनता एवं आधुनिकता—धार्मिक लोक कला रूपों में चित्रफलक पारम्परिक एवं विधिवत कठिन परिश्रम से तैयार किए जाते थे परन्तु वर्तमान समय के अनुसार 24 हाथ की पड़ का स्थान एक हाथ की पड़ ने ले लिया है। पहले पड़ चित्र मोटे खादी के रेजे पर बनते थे जिसे कठिन परिश्रम से कलफ लगाकर व घुटाई करके चित्रण योग्य बनाया जाता था परन्तु वर्तमान में सिल्क पर या कागज पर चित्रण करके चित्रकार अपनी कला को आधुनिक स्वरूप मे प्रस्तुत करके लोक कला को जीवित रखे हुए हैं। पहले पारम्परिक कांवड़ भी 12 पाट की होती थी जिनमें रामायण व महाभारत के अलावा अन्य भारतीय आदर्शों को प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया जाता था। यह दृश्य-श्रृव्य कला का विशिष्ट व प्रभावी साधन लोक जन के लिए था परन्तु वर्तमान में समय की मांग को देखते हुए छोटी-छोटी कांवड़ तैयार की जाती है। जो कि कालांतर में बदलती परिस्थिति से धार्मिक आस्था के स्थान पर धनाढ्य वर्ग के घरों में आंतरिक सज्जा का अंग बन गई है।

कांवड़ का धार्मिक महत्व के साथ-साथ कलात्मक महत्व भी बढ़ा, जिससे वह सजावट की वस्तु बन गई और 12 पाट से 1 पाट तक सिमट गई। चित्रफलक में भी पारम्परिक आड़ूसा की लकडी के स्थान पर अन्य सस्ती लकड़ियों व बोर्ड का प्रयोग किया जाने लगा हैं। नवीन प्रयोग लोक कला के मूल के लिए अवश्य कष्टप्रद है परन्तु लोक कला के प्रचार व प्रसार के लिए शुभ संकेत है। चित्रकार ने पेंसिल बॉक्स, कोस्टर अन्य प्रकार की लाभदायक वस्तुओं पर इन लोक कलात्मक मुख्याकृतियों को बनाकर लोक कला को जीवित रखा हुआ है।

थापों में भी अब पारम्परिक थापों में नवीनता दृष्टिगोचर होने लगी है। महिलाओं ने भी समय का अभाव व सीमित साधनों हेतु आकार को छोटा कर दिया है, जिससे महिलाओं को बनाने में सरलता हो जाती है। गणगौर में ही गांवो में पूरी गणगौर बनाने के स्थान पर मुख्य बाहरी आकार को बनाकर छोड़ दिया जाता है व गणगौर आने पर अंदर की आकृतियों व ईसर गणगौर को बनाया जाता है। गोदना कलाकार भी नये रूपों का प्रयोग करने लगे है।

3. वर्ण-विधान में नवीनता एवं आधुनिकता—राजस्थान में रंग निर्माण प्रक्रिया में चित्रांकन हेतु प्राकृतिक खनिज, वनस्पतिक, धात्विक रंग प्रयोग किए जाते थे। जिनकी निर्माण प्रक्रिया अत्यंत कठिन होती थी और बनाने में भी समय लगता था। प्राकृतिक खनिज रंगों में हरिताल, हिंगलू, हरा भट्ट, लाजवर्द आदि रंगों को पीसकर, छानकर, घोटकर व गोंद मिलाकर तैयार किया जाता था। वनस्पतिक रंगों में पीला रंग केसूले के फूलों से, हरा रंग पशुओं के चारे से, लाल रंग वृक्षों की लाख से, अन्य रंग कुछ रंगों के मिश्रण को चूने, लोहे और तांबे आदि के बर्तनों में रंग रखकर तैयार किये जाते थे। इनके अतिरिक्त धात्विक रंग सोने, चांदी आदि के रंग भी बहुत मेहनत से बनाए जाते थे। आजकल इन सब रंगों का स्थान बाजार में मिलने वाले एक्रैलिक रंग, वार्निश आदि ने ले लिया है जो शीघ्रता से कार्य करने में सहायक होते हैं परन्तु पारम्परिक कांवड़ व पड़ें आज भी पारम्परिक रंगों से ही बनती हैं।[10] माण्ड़ने आदि में भी गेरू व खड़िया का स्थान बाजार में मिलने वाले डिस्टेम्पर रंगों ने ले लिया है। इससे ये रंग शीघ्रता से तैयार हो जाते हैं व आकर्षक भी लगते हैं। कुछ महिलाएं खड़िया में ही थोड़ा बाजार का रंग मिला देती है, जिससे इसका स्वरूप न बदले व माण्ड़ना भी आकर्षक लगे।

कांवड़ के सभी पट लाल रंगीय चित्रतल को लिए होते थे जिस पर काली रेखाओं द्वारा विभिन्न रंगों की ओजपूर्ण शैली देख लोक जन का प्रत्येक व्यक्ति स्वत: ही आकर्षित हो जाता है। भावपूर्ण बने चित्र उसके अंदर मन में वही भाव भर देते हैं जो उनमें अंकित हैं परन्तु वर्तमान में कलाकार सभी पट पर हरे, नीले, सफेद, आदि रंगो का प्रयोग कर नवीनता लाने का प्रयास कर रहा है। शैली तो वही है चित्र भी वही है परन्तु चित्र पर धरातल का रंग नवीनता लिए हुए हैं।

इसी भांति पड़ चित्रों के धरातल एवं रंगों में भी नवीनता है। पड़ चित्रों में आकृति में भी अब खादी के स्थान पर सिल्क का प्रयोग होने से चित्रण में नवीनता आई है। अब केवल काली रेखाओं से ही संपूर्ण चित्र बना लिया जाता है।

4. संयोजन में नवीनता एवं आधुनिकता—लोक कला में संयोजन में नवीनता आकृति विषयक है। पड़ चित्रों में जहां एक ही चित्रफलक पर 700 चित्रों का समायोजन होता था। वहीं अब चित्रफलक पर केवल मुख्य आकृति अथवा अन्य विषयक आकृतियों का संयोजन किया जाने लगा है। वर्तमान में एक या दो आकृतियों के संयोजन से भी पड़ चित्र तैयार किए जाने लगे हैं। इसी प्रकार कांवड़ चित्रों में भी कम आकृतियों का संयोजन किया जाने लगा है। पहले कांवड़ में रामदला, कृष्णदला तथा लोक कथाओं का समावेश होता था परन्तु अब गणेश, विष्णु आदि को बनाकर भी छोटी कांवड़नुमा पेटी तैयार की जाती है।

नवीन विषयों की पड़ शैली में संयोजन करना हर लोक कलाकार के लिए आसान कार्य नहीं है। इन्हें चित्रांकन करने में व्यक्तिगत रूचि तथा प्रतिभा के साथ-साथ श्रेष्ठ संयोजन की कला का

आना भी आवश्यक है। इस प्रयोग में स्व. श्रीलाल जी प्रथम स्थान पर थे। अब उनके पुत्र श्री कल्याण जी जोशी है, उन्होंने इस कार्य को नवीनता संयोजन के माध्यम से दी है। पड़ लोक शैली के माध्यम में ही उन्होंने चित्रों के नवीन विषय को लेकर चित्रफलक पर उस विषय से संबंधित चित्रों को एक साथ संयोजित किया है। कांवड़ को भी अजन्ता गुफा चित्रों की भांति संयोजन वैभव प्राप्त हुआ है। इसके संयोजन में भी केन्द्रीयता का ध्यान रखा गया है। एक ही फलक पर कथा प्रसंग के अनुकूल चित्रभूमि को अलग-अलग भागों में विभाजित कर सीमांकित किया तथा उसने मुख्य आकृति को मध्य में अंकित किया। जिससे हमारी दृष्टि मुख्य आकृति तक स्वंय पहुंच जाती है क्योंकि मुख्य आकृति को प्रधानता देने के लिए उसे बीचों-बीच बड़े आकार के रूप में स्थापित किया गया है। संयोजन प्राय: स्थानों की भौगोलिक स्थिति के आधार पर वर्तुलाकार (वृत्त), अण्डाकार या आयताकार होता है। चित्रों में हाथी, घोड़े, ऊंट, नारी, नर, पेड ? आदि के चित्रण में कहीं भी भीड़-भाड़ नहीं है। जिससे कुशल संयोजन का परिचय प्राप्त होता है। किंतु वर्तमान में छोटी कांवड ? में कम आकृतियों का संयोजन किया जाने लगा है। नवीन विषयों में आकृति व शैलीगत संयोजन एवं सृजनात्मकता के कारण ही संभव है परन्तु इन लोक कलाकारों में श्री सत्यनारायण जी ने इस कसौटी को पूर्ण से सिद्ध कर दिया है।

लोक कला को आज आधुनिक परिवेश में विकसित करने के लिए लोक के साथ-साथ लोक कला मंडल, उदयपुर का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लोककला मंडल लोक कलाओं को बढ़ावा देने के साथ-साथ लोक कलाकारों को भी प्रोत्साहित करता है। आज के शोधार्थी विभिन्न लोक विषयों को शोध विषय के रूप में चयन करके प्राप्त सामग्री का संकलन देश-विदेश में भी पहुंचाते हैं। आज का लोक कलाकार भी आधुनिक परिवेश के साथ लोक कला शैली को अपनाने के साथ ही उसके रंग, आकार, सामग्री तथा माध्यम से आधुनिकता लाने का प्रयास भी कर रहा है अर्थात मूल शैली वही रहते हुए भी आकार और रंगों में नवीनता का प्रभाव दिखाई देता है। धार्मिक प्रसिद्धि के कारण ही लोक देवता देवनारायण की पड़ पर डाक टिकट भी जारी किया गया है।

अत: लोककला आधुनिक कलाकार की आत्मिक अभिव्यक्ति मात्र न होकर जनमानस की भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है। लोक कला का जनसाधारण पर प्रभाव व विदेशियों को आकर्षित करने की सामर्थ्य ने लोक कला को आधुनिकता की ओर अग्रसर किया। उसके स्वरूप को परिष्कृत

एवं परिमार्जित किया। उसके आधुनिक सृजन के पीछे छिपी धार्मिक भावना, सामाजिक उपयुक्तता का विचार व परम्परा के प्रति निष्ठा की रक्षा भी महत्वपूर्ण कारण है। लोक कला की इन विशेषताओं के साथ लोक कलात्मक स्वरूप विकसित होकर विश्व सौंदर्य की बहुरंगी, उत्साहवर्धक, प्रेरणाप्रद विविधता के साथ आधुनिक स्वरूप में विकसित हुआ है। ये लोक कलाएं लोक परम्पराओं के अनुरूप विशिष्ट स्वरूप ग्रहणकर सार्वजनिक रूप से लोक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए आधुनिक स्वरूप में सौंदर्यनुभूति का भी आभास देती हैं। अत: आधुनिकता के साथ लोककला अपनी परम्परा, विश्वास, धर्म एवं सौंदर्य की सशक्त अभिव्यक्ति करती है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, डॉ. जी.के., कला समीक्षा, पृ. 43
2. सक्सेना, प्रो. रणवीर, कला सौन्दर्य और समाज, पृ. 74
3. दूबे, श्यामसुन्दर, लोक परम्परा, पहचान एवं प्रवाह, दिल्ली, 2011, पृ. 56
4. दूबे, श्यामचरण, लोक साहित्य और संस्कृति, पृ. 267
5. अग्रवाल, गिर्राज किशोर, लोक जीवन के तपस्वी कलाकार यामिनी रंजन राय, दैनिक हिन्दुस्तान, एक लेख, 8 जून 1962
6. भानावत, डॉ. महेन्द्र, लोककला—प्रयोग और प्रस्तुति, पृ. 29
7. भानावत, डॉ. महेन्द्र, लोक कलाओं का आजादीकरण, हिन्दुस्तान पत्रिका, नई दिल्ली, 8 अगस्त 1993
8. आकृति, लोककला, विशेषांक, जयपुर, जुलाई-सितम्बर 1990, पृ. 27
9. शान्तिलाल जी से भेंटवार्ता के आधार पर प्राप्त जानकारी के अनुसार 27.11.2017
10. कल्याण जोशी से भेंटवार्ता के आधार पर प्राप्त जानकारी 2.12.2018

❑❑

डॉ. निधि शर्मा
सहायक आचार्या (हिंदी विभाग)
राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय
हिमाचल प्रदेश, नगरोटा, बगवां

ATISHAY KALIT
Vol. 9, Pt. A
Sr. 15, 2022
ISSN : 2277-419X

गुलेरी की कहानियों में हिमाचली लोकरंग लिए हुए भाषा एवं आँचलिकता

सारांश—बीसवीं सदी के प्रथम चरण में जिन साहित्यकारों ने हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध बनाने में उल्लेखनीय योग दिया, उनमें पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी का विशिष्ट स्थान है। जीवन के साथ परिवर्तनशीलता में उनका अटूट विश्वास था और यही प्रवृत्ति उन्होंने साहित्य में भी निभाई। उनकी कहानियों में सबसे बड़ा आकर्षण उनकी हिमाचली लोकरंग लिए हुए भाषा है। उन्होंने अपनी कहानियों में पहाड़ी शब्दों का जहाँ-तहाँ सटीक प्रयोग किया है। उनकी दृष्टि बोलियों की शब्दावली को ग्रहण करके हिंदी के शब्द-भंडार को सतत समृद्ध करने के प्रति सचेत थी। गुलेरी जी भाषा के कुशल प्रयोक्ता हैं। संवादों को पात्रानुकूल बनाने के लिए वह 'आंचलिक' शब्दावली का नि:संकोच प्रयोग करते हैं। उन्होंने 'हिमाचली पहाड़ी' (काँगड़ी)को पुरानी पंजाबी के परिवेश में खूब समझा और समझाया। उनकी कहानियों में हिमाचली पहाड़ी (काँगड़ी) के शब्द भंडार को देखते हुए उनके अप्रतिम प्रातिभ होने की पुष्टि स्वयंमेव हो जाती है।

संकेत शब्द—पहाड़ी, सतत, समृद्ध, आँचलिक शब्दावली, लोकरंग।

संपूर्ण हिंदी साहित्य में चंद्रधर शर्मा गुलेरी की अपनी पहचान है। वे द्विवेदी युग के प्रतिनिधि लेखक थे। उन्होंने सदैव ही भाषा के वास्तविक रूप को बनाए रखा। उनकी भाषा में जीवनगत विभिन्न पात्रों की विभिन्न मनोदशाओं को व्यक्त करने की अद्‌भुत क्षमता है जिससे कहानियों में सजीवता बढ़ गई। ''बहुभाषाविद् गुलेरी का व्यक्तित्व और भी विराट् तथा प्रभावजन्य है। इतनी अल्पायु में अनेक भाषाओं के साहित्य का शीर्षस्थ ज्ञानार्जन और तलस्पर्शी शोध उनकी बहुभाषाविज्ञता का प्रमाण है। एक ओर उन्होंने वैदिक संस्कृत, संस्कृत, पुरातत्व, भाषाशास्त्र प्राचीन इतिहास ,पाली, प्राकृत, अपभ्रंश तथा हिंदी का गंभीर अनुशीलन किया तो दूसरी ओर लेटिन, अंग्रेज़ी, फ्रेंच तथा जर्मन पर अधिकार प्राप्त कर लिया। इसके अतिरिक्त अरबी और फारसी में भी उनकी अबाध गति थी। अन्य भारतीय भाषाओं में बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी और हिमाचली (पहाड़ी) पर इनका पूर्ण अधिकार था। इतना कह देना ही पर्याप्त नहीं कि वे बहुभाषाविज्ञ थे प्रत्युत् उनकी विलक्षणता उन भाषाओं के सृजनात्मक योगदान से भी परिलक्षित होती है। 'पुरानी हिंदी' नामक पुस्तक का अध्ययन-मात्र उनकी निरूक्ति-विषयक प्रतिभा का आश्वस्त प्रमाण है।''[1] इनकी भाषा आज भी साहित्य के विद्यार्थियों के लिए आदर्श है। उनकी भाषा में हिमाचली काँगड़ी की ध्वनियों तथा शब्दावली का भंडार है। ''भारत का अतीत उन्हें हस्तामलकवत् था। अभिभूत करने वाली बात यह है कि इतने पर भी वे अतीतजीवी नहीं थे। अतीत से अधिक उन्हें वर्तमान आकृष्ट करता था और साथ ही उत्कृष्ट सर्जक थे। यह दुर्लभ

संयोग कम घटित होता है कि इतना बड़ा विद्वान, इतना जिज्ञासु लोक-संग्रही हो। हिंदी में इसके प्रतिमान तुलसीदास हैं, खड़ी बोली में पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी और उनके बाद पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी। उनके लेखन से उनका देश-प्रेम एवं क्षेत्र प्रेम व्यवस्थित है। इस देश प्रेम की प्रमुख वाहिका उनकी भाषा है।''[2] गुलेरी का निज भाषा के प्रति गहन सम्मान था उन्होंने जननी, निजभाषा और माँ समान भारतभूमि को हमेशा सम्मान दिया। बोलचाल की भाषा जैसी होनी चाहिए, वैसी ही है, कृत्रिमता कहीं नहीं है। मानव चरित्र का प्रत्येक कहानी में विलक्षण वर्णन है। इनकी कहानियों में सर्वत्र पात्र तथा परिस्थिति के अनुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है और इस प्रयोग से वर्णनों में सर्वत्र जीवंतता आ गई है। ''उनकी भाषा की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है..... उसमें हिमाचली पहाड़ी (काँगड़ी) की भीनी-भीनी गंध। उनका जन्म जयपुर में हुआ, शिक्षा-दीक्षा भी हिमाचल से बाहर ही हुई तथापि उन्होंने अपनी पैतृक भूमि गुलेर काँगड़ा तथा वहाँ की बोली को नहीं छोड़ा। उन्होंने इस जनपद की बोली को बड़े मनोयोग से अपनी कहानियों तथा निबंधों एवं टिप्पणियों में उभारा है। उन्होंने हिमाचली पहाड़ी के वाक्यों का हिंदीकरण करके तथा आँचलिक शब्दों के प्रयोग से हिंदी के शब्द-भंडार को खूब समृद्ध किया है।''[3] 'उसने कहा था' कहानी में आँचलिक शब्द-प्रयोग में और भी परिपक्वता आती है। इसमें आँचलिक शब्द पूरी कहानी में व्याप्त हैं। इसके कारण कहानी को स्थानिया रंग मिलता है और उसमें वैशिष्टय आया है।

गुलेरी जी की कहानियों में कतिपय ठेठ आँचलिक शब्दों का प्रायोग है। जैसे—'लाड़ी होरां', 'सूबेदारनी होरां'। हमारे यहाँ काँगड़ा में बहू को लाड़ी कहते हैं।[4] होरां शब्द आदरसूचक प्रयोग है। गुलेरी जी ने 'सुखमय जीवन' में सुपने (स्वप्न) घोखणा (दोहराना) आदि और 'बुद्धू का कांटा' मे बाछा (बादशाह), लादा (बोझा), कणक (गेहूं) नाते (संबंधी), मंजड़ी (चारपाई), सली (लित्त, बांस आदि लकड़ी का रेशा चुभना), नाल (साथ), पल्ले (पास, कब्जे में), करम (कृपा), रखवाल (रखेल), गलसूंड (श्वास नलिका में कुछ अटक जाने पर सांस लेने में होने वाली परेशानी), खिरती (क्षरितहोती), छर्रें (छरड़ा, झरना), ब्याह (विवाह), छोकरी (लडकी), परले पार (दूसरी तरफ)तथा 'उसने कहा था' में चींथ (चुत्थणा, कुचलना), उदमी (उद्यमी), सालू (लाल रंग की ओढ़नी), कुड़माई (सगाई), पाधा (उपाध्याय, पुरोहित), घुमां (जमीन का एक नाप), सिगड़ी (अँगीठी या काँगड़ी), बेड़ा (आँगन, मकानों के बीच खाली भाग) ओबरी (भीतरी कमरा), हाड़ (आषाढ़), बरस (वर्ष), मत्था टेकना (चरण स्पर्श), मंजा (चारपाई), मांदे पड़ना (बीमार पड़ना), आदि ठेठ काँगड़ी शब्दों का प्रयोग किया है।

गुलेरी जी ने हिमाचली पहाड़ी के वाक्यों का हिंदीकरण करके तथा आँचलिक शब्दों के प्रयोग से हिंदी के शब्द-भंडार को खूब समृद्ध किया है। 'बुद्धू का काँटा' कहानी के निम्न वाक्यों से यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है—''बांछा, तुम जैसे साई लोकों की बरकत से मैं हज कर आया, ख्वाजा का उर्स देख आया, तीन बेले नमाज पढ़ लेता हूं और मुझे क्या चाहिए बांछा, मेरा काम टट्टू चलाना नहीं है। अब तो इस मोती की कमाई खाता हूं कभी लादा, ढाई मण कणक पा लेता हूं, तो दो पौली बच जाती है। रब की मरजी, मेरा अपना घर था सिंहों के वक्त की माफी ज़मीन थी, नाते पड़ोसियों में मेरा नाम था। मैं धामपुर के नवाब का खाना बनाता था और मेरे घर में से उसके जनाने में पकाती थी। एक रात को मैं खाना बना-खिला के अपनी मंजड़ी पर सोया था कि, मेरे मौला ने मुझे आवाज़ दी.....लाही, लाही हज कर आ.....वहाँ मेरे पल्ले टका नहीं था।''[6]

''.....तुझे रात दिन ऊतपन ही सूझता है। इन्हें गलसुंड चला गया।''[7]

''छोकरी तू बहुत सिर चढ़ गई है, चिकर-चिकर करती ही जाती है! नहीं जी, एक ही रास्ता है, सामने नदी आवेगी, परले पार बायें हाथ को गाँव है।''[8]

''नदी की तलेटी में एक चट्टान थी, पानी के बहाव से क्रमशः खिरती जाती थी.....एक हाथ से उसे खींचती हुई रघुनाथ को छर्रे के बहाव से निकाल लाई।''[9]

इसी प्रकार 'उसने कहा था' कहानी में हिमाचली पहाड़ी के वाक्यों का प्रयोग गुलेरी जी ने किया है—''चालाक तो बड़े हो पर मांझे का लहना इतने बरस लपटन साहब के साथ रहा है....चौधरी के बड़ के नीचे मंजा बिछाकर हुक्का पीता रहता था।''[9]

''.....सूबेदारनी होरां को चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना।''[10] जैसे वाक्य हिंदी भाषा को हिमाचली पहाड़ी के पास ले जाने में समर्थ हैं। इससे लगता है कि लेखक की दृष्टि भाषा को सहज और सरल बनाने के साथ अँचल विशेष की भाषिक संरचना के रंग में रंग देने की भी रही है। जिस लोक-संस्कृति, आँचलिकता, लोकरंग की चर्चा, साहित्य में आज की जाती है। उसका सूत्रपात गुलेरी ने तत्कालीन समय कर डाला था। इससे उनकी सुदूरगामी साहित्यिक-दृष्टि का परिचय मिलता है।

व्यक्ति जिस अँचल का हो, जिस स्थान, प्रदेश के उसके माता-पिता हों वहाँ से उसे स्वतः ही लगाव हो जाता है। गुलेरी गुलेर (काँगड़ा) में पैदा नहीं हुए हैं परंतु वहाँ के उनके पूर्वज थे। फिर वह समय-समय पर अपनी पैतृक जन्मभूमि में आते रहते थे। इसलिए उस स्थान के प्रति उनका प्रेम एवं लगाव स्वाभाविक है। गुलेरी जी के साहित्य में, काँगड़ा के रीति-रिवाज़ों, नदी-नालों, पेड़-पौधों, आँचलिक परिवेश तथा वहाँ की बोली के प्रति मोह स्पष्ट झलकता है 'बुद्धू का काँटा' कहानी का एक उदाहरण प्रस्तुत है—''वहाँ तीस मील पहाड़ी रास्ता था। दूरी पर चूने के से ढेर चमकते दिखने लगे जो कभी न पिघलने वाली बर्फ के पहाड़ थे। रास्ता सांप की तरह चक्कर खाता था। मालूम होता कि एक घाटी पूरी हो गई है पर ज्योंहि मोड़ पर आते, त्योंहि उसकी जड़ में एक और आधी मील का चक्कर निकल पड़ता एक ओर ऊंचा पहाड़, दूसरी ओर ढाई सौ फुट गहरी खड्डा।''[11] 'बुद्धू का काँटा' कहानी में चूने के पहाड़ का वर्णन 'धौलाधार' पर्वत की ओर संकेत है। 'उसने कहा था' में वर्णित 'बुलेल की खड्ड' बंडेर खड्ड ही तो है। गुलेरी जी की 'उसने कहा था' कहानी में आँचलिकता का आँचल पकड़े हुए कहानी का कथातत्व युगबोध से अनुप्राणित है। उसमें माटी की गंध है, परिवेश की जीवंतता है और संवेदना का एक व्यापक धरातल है।

''हिंदी कहानी के शैशवकाल में गुलेरी जी ने आँचलिकता की छौंक लगाकर जिस भाषा-शैली का सूत्रपात किया था, बाद के हिंदी कथाकारों ने उसे अपनी शैलीगत विशिष्ट्ता के रूप में अपनाया और उस दिशा में नए प्रयोग करके हिंदी कथा-साहित्य में आँचलिकता को रूपाकार दिया। कहने का आशय यह है कि हिंदी कहानी और उपन्यास में आँचलिकता की प्रवृत्ति लाने का श्रेय बहुत कुछ पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी को जाता है।''[12] उनके बाद हिमाचल प्रदेश के कहानीकारों में इस प्रवृत्ति को यशपाल, मस्तराम कपूर, विजय सहगल, सुदर्शन वशिष्ठ, विजया प्रभाकर, केशव आदि ने अपने कथा-साहित्य में अपनाया है।

अत: कहा जा सकता है कि चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियाँ विशेष रूप से आँचलिक एवं ग्रामीण जीवन के बहुरंगी चित्रों का उपयोगी एलबम है। इनकी कहानियाँ काल-देश की सीमाओं को लांघकर समस्त मानवता से जुड़कर दिनों-दिन अपनी महत्ता उजागर कर रही हैं। उनका भाषा संबंधी आदर्श न केवल महान् और अनुकरणीय है बल्कि उस युग में इतनी समर्थ और सशक्त भाषा लिख सकना स्वयं में एक बड़ा आश्चर्य है। गुलेरी पांडित्य तथा बहुज्ञता से मंडित होते हुए भी अपनी कहानियों में आम बोलचाल की भाषा के सहज, सरल रचनाकार के रूप में सामने आए हैं।

संदर्भ

1. गुलेरी, पीयूष : प्र.सं. 1983, श्री चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' व्यक्तित्व एवं कृतित्व, दिग्दर्शनचरण जैन, ऋषभचरण जैन एवं संतति, नई दिल्ली, पृ. 146
2. त्रिपाठी विश्वनाथ (सं.), प्र.सं. 1997, हिंदी नवजागरण के अग्रदूत चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी', नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, पृ. 10
3. लाल मनोहर (सं.), प्र.सं. 1983, गुलेरी साहित्यालोक, किताब घर, मेन बाज़ार, गाँधी नगर, दिल्ली, पृ. 168
4. वही, पृ. 123
5. वही, पृ. 67, 68
6. वही, पृ. 74
7. वही, पृ. 74
8. वही, पृ. 79, 80
9. वही, पृ. 101
10. वही, पृ. 103
11. वही, पृ. 69,70
12. लाल मनोहर (संपादक) सं. 1983, गुलेरी साहित्यालोक, पृ. 124, किताबघर, मेन बाज़ार, गाँधी नगर, दिल्ली, पृ. 124

❑❑

डॉ. मोहन लाल जाखड़
स्कॉलर, आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली
पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

ATISHAY KALIT
Vol. 9, Pt. A
Sr. 15, 2022
ISSN : 2277-419X

अफगानिस्तान में तालिबान की सत्ता में वापसी के बाद : भारत के लिए उत्तर-दक्षिण ट्रांजिट कॉरिडोर और चाबहार के निहितार्थ

चाबहार बंदरगाह ईरान के सिस्तान और बलूचिस्तान प्रांत के मकरान तट पर, ओमान की खाड़ी के पास होर्मुज जलडमरूमध्य के मुहाने पर स्थित है। ये भारत के लिए हिन्द महासागर तक सीधी पहुँच वाला एकमात्र ईरानी बंदरगाह है। इसकी सामरिक स्थिति और उत्तर-दक्षिण ट्रांजिट कॉरिडोर से जुड़े होने के कारण, इसे अफगानिस्तान और मध्य एशिया के लिए ''गोल्डन गेट'' कहा गया है।[1] चाबहार प्रोजेक्ट की सफलता में गहरी रुचि रखने वाले ईरान और उसके उत्तर-पूर्वी पड़ोसी एकमात्र अभिकर्ता (Actors) नहीं है अर्थात् ईरान का ''एकमात्र समुद्री बंदरगाह'' भी भारत के अंतर क्षेत्रीय पारगमन और व्यापार रणनीतियों का एक प्रमुख केन्द्र है।

चाबहार बन्दरगाह

चाबहार के पास ग्वादर (पाकिस्तान) बंदरगाह को पाकिस्तान चीन के सहयोग से विकसित करने की योजना को देखते हुए, भारत ने ईरान, अफगानिस्तान और मध्य एशिया के साथ व्यापार को बढ़ावा देने के लिए चाबहार में पारगमन क्षमता में वृद्धि को सुविधाजनक बनाने पर ध्यान केन्द्रित किया और क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वियों पाकिस्तान और चीन को ''बायपास'' करते हुए निवेश करने की योजना बनाई। भारत और ईरान पहली बार 2003 में शाहिदे बेहेश्ती बंदरगाह (शाहिद कलंतरी के अलावा दो बंदरगाहों में से एक, जो पूरे चाबहार बंदरगाह परिसर को बनाते है) को विकसित करने की योजना पर सहमत हुए लेकिन उस समय ईरान के खिलाफ लगे आर्थिक प्रतिबंधों की वजह से इस परियोजना पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया।

एक दशक बाद 24 मई, 2016 में भारत, ईरान और अफगानिस्तान ने एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके तहत ईरान में चाबहार बंदरगाह का उपयोग करते हुए समुद्री परिवहन के लिये क्षेत्रीय हब के रूप में ''ट्रांजिट और ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर'' स्थापित करने की परिकल्पना की गई। अफगानिस्तान और मध्य एशिया के लिए एक वैकल्पिक व्यापार मार्ग के रूप में चाबहार बदरगाह से जाहेदान (अफगानिस्तान सीमा) तक एक रेल लाइन का निर्माण भी इस परिवहन गलियारे का एक हिस्सा था। अक्टूबर, 2017 में भारत के द्वारा अफगानिस्तान में गेहूँ की पहली खेप चाबहार के माध्यम से भेजी गई थी। इस त्रिपक्षीय समझौते ने न केवल भारतीय फर्मों को पाकिस्तान को बायपास करने और पश्चिम में वैश्विक बाजारों तक पहुंचने की अनुमति दी बल्कि, भारत ने हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को भी प्रतिसंतुलित किया।[2]

इस समझौते से भारत को अफगानिस्तान में पहुँचने का एक वैकल्पिक मार्ग मिलेगा लेकिन, पाकिस्तान इस समझौते को लेकर चिंतित है। पाकिस्तान ने आरोप लगाया कि भारत अफगानिस्तान के मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है और उसका इरादा पाकिस्तान को दोनों सीमाओं पर घेरने का हैं। वैसे भारत से अफगानिस्तान वस्तुऐं भेजने का आसान तरीका तो पाकिस्तान के रास्ते है, लेकिन दोनों देशों के संबंध लम्बे समय से मधुर नहीं है और दोनों के दरवाजे एक दूसरे के लिए पूरी तरह से बंद है। इसलिए चाबहार बंदरगाह के माध्यम से पाकिस्तान को बायपास करते हुए भारत, अफगानिस्तान और मध्य एशिया के देशों तक अपनी पहुंच बढ़ाना चाहता है।

चाबहार बंदरगाह के सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शवकत मिर्जियोयेव को सत्ता में आने के बाद, ताशकंद भी चाबहार बंदरगाह के माध्यम से पार-क्षेत्रीय पारगमन मार्ग तक पहुँचने में रुचि दिखाना शुरू कर दिया (मध्य एशिया के देश स्थलबद्ध होने के कारण व्यापार के लिए समुद्री मार्ग तक सीधी पहुँच नहीं होने के कारण)। अपने पूर्ववर्ती, स्वर्गीय इस्लाम करीमोव के विपरीत मिर्जियोयेव तेहरान के प्रति तनाव शिथिल्य (Detente) की नीति का अनुसरण कर रहे है। हालांकि, ईरान और तुर्कमेनिस्तान के बीच तनाव था, जिसने वर्षों से इस्लामिक गणराज्य और मध्य एशिया के बीच भूमि-पारगमन को बाधित किया और ताशकंद को भी प्रेरित किया। आखिरकार, इस गतिरोध को तोड़ते हुए 14 दिसम्बर, 2020 को उज्बेकिस्तान, ईरान और भारत ने चाबहार बंदरगाह पर अपना पहला (आभासी) ''त्रिपक्षीय कार्य समूह'' आयोजित किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति मिर्जियोमेव ने एक भारतीय-उज्बेकिस्तान आभासी शिखर सम्मेलन में तीन दिन पहले लिए गए निर्णयों पर बैठक का पालना किया गया।[3]

ये शर्ते, जो चार क्षेत्रीय ईरान-भारत-अफगानिस्तान और उज्बेकिस्तान के बीच हमेशा घनिष्ठ सहयोग और समझौते की अनुमति देती थी लेकिन, वो अशरफ गनी की सरकार के पतन और तालिबान के काबुल की सत्ता पर कब्जा करने के बाद मौलिक रूप से बदल गई। तालिबान और पाकिस्तान के घनिष्ठ संबंधों को देखते हुए भारत, अफगानिस्तान में इसे एक बड़ी हार के रूप में देख रहा है और निसंदेह, एक बड़ी दुर्घटना बहुप्रतीक्षित चाबहार बंदरगाह परियोजना होगी। जिसका उद्देश्य नई दिल्ली को पाकिस्तान को दरकिनार करने और अफगानिस्तान, मध्य एशिया जाने वाले भारतीय सामानों के लिए एक मार्ग खोलने का अवसर देती थी।[4] काबुल के पतन के कुछ समय बाद, भारतीय

अधिकारियों ने घोषणा की, कि तालिबान शासित अफगानिस्तान दक्षिणी-पूर्वी ईरान में चाबहार बंदरगाह का उपयोग करने के लिए भारत-ईरान-उज्बेकिस्तान समझौते का हिस्सा नहीं होगा।[5]

निसंदेह, तालिबान के कब्जे के बाद अफगानिस्तान की स्थिति उज्बेकिस्तान-अफगानिस्तान-ईरान-भारतीय चतुष्क (Quarted) गुट को बाधित करेगी। वे संयुक्त रूप से अफगानिस्तान से होकर गुजरने वाले 7,200 किलोमीटर से अधिक पारगमन मार्ग का विकास कर रहे थे; लेकिन ईरान और उज्बेकिस्तान सहित दुनिया के किसी भी देश ने अभी तक (10 जनवरी, 2022) तालिबान द्वारा बनाई गई अंतरिम सरकार को राजनीतिक मान्यता नहीं दी है। भारत और कश्मीर पर तालिबान का रूख, जो कि पाकिस्तान के अनुरूप है। वह काबुल और नई दिल्ली के बीच के तौर-तरीकों के लिए किसी भी संभावना को कमजोर करता है। उन परिस्थितियों में, चाबहार को पहले से ही देरी का सामना करना पड़ रहा है, जो भारत में 2021-22 के वित्तीय वर्ष में कुल निर्यात का 400 बिलियन डॉलर तक बढ़ाने के अपने लक्ष्य को खोने में योगदान दे सकता है। रूस के अलावा, पूरे मध्य एशिया क्षेत्र के साथ भारत का व्यापार 2020 में केवल 1.5 बिलियन डॉलर था, जो भारत के वार्षिक व्यापार का मात्रा 2 प्रतिशत है।[6]

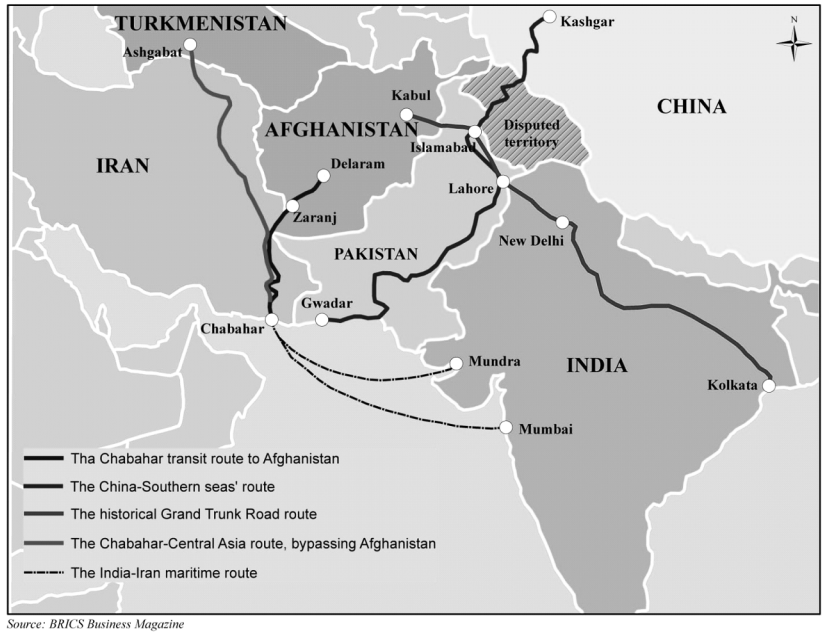

Source: BRICS Business Magazine

स्पष्ट रूप से तालिबान, पाकिस्तान के साथ प्रतिस्पर्धी चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) के पक्ष में चाबहार मार्ग का प्रयोग कम पसंद करेगा। सीपीईसी के ढांचे के भीतर, बीजिंग पहले ही ग्वादर बंदरगाह में भारी निवेश कर चुका है, जो पाकिस्तान के साथ लगती ईरान की सीमा से लगभग 72 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। इसलिए, चाबहार को आर्थिक रूप से व्यवहार्य रखना भारत के लिए चिंता का विषय है क्योंकि, इस क्षेत्र में प्रभाव को बनाये रखने के लिए चीन से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

ऐसी परिस्थिति में यह संभावना है कि तुर्कमेनिस्तान चतुर्भुज चाबहार बंदरगाह उपयोग समझौते में अफगानिस्तान की जगह ले। लेकिन इसके लिए पहले प्राकृतिक गैस और साझा सीमा पार करने वाले ईरानी ट्रकों पर प्रतिबंध पर ईरानी-तुर्कमेनिस्तानी विवादों को सुलझाने की आवश्यकता होगी।[7] इस विवाद पर कुछ सकारात्मक हलचल पहले ही देखी जा चुकी है। दुंशाबे, ताजिकिस्तान में नवीनतम (17 सितम्बर, 2021) शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन के अवसर पर, ईरानी राष्ट्रपति इब्राहिम रइसी और उनके तुर्कमेनिस्तानी समकक्ष गुरबांगुली बर्दीमुहामेदोव ने द्विपक्षीय गैस विवाद को हल करने के लिए विशेष रूप से सहमति व्यक्त की।[8] लेकिन यह देखा जाना बाकी है, कि यह स्वीकार्य बयानबाजी कितनी जल्दी वास्तविक नीतिगत बदलाव में बदल जाती है। ईरान के चाबहार बंदरगाह से भारत मध्य एशिया के मल्टी-मॉडल ट्रांजिट रूट से पहले ऐसा बदलाव होना चाहिए, जो अपने लम्बे समय से चले आ रहे आर्थिक और भू-राजनीतिक वादों को पूरा कर सकता है।

अफगानिस्तान में भारत के हितों के लिए ईरान का महत्व—पश्चिम एशिया के भू-राजनीतिक परिदृश्य से लेकर अफगानिस्तान में बदलते सत्ता समीकरण हो या फिर पाकिस्तान को नजरअंदाज करते हुए अफगानिस्तान, मध्य एशिया, रूस और यूरोप तक पहुँच बनाने का प्रयास या फिर भारत की ऊर्जा सुरक्षा जरूरते इन सभी रणनीतियों के लिहाज से ईरान का साथ होना भारत के लिए महत्वपूर्ण है। ईरान के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति के शपथ ग्रहण समारोह में भारतीय विदेश मंत्री भी तेहरान में उपस्थित रहे।[9] भारतीय विदेश मंत्री का एक महीने के भीतर यह दूसरा ईरान दौरा यही दर्शाता है कि तेहरान किस प्रकार नई दिल्ली की प्राथमिकताओं में है। दरअसल, मौजूदा वैश्विक भू-राजनीतिक समीकरणों में ईरान की स्थिति जटिल होते हुए भी बड़ी महत्वपूर्ण बनी हुई है। विशेषकर भारत के लिए ईरान की खासी अहमियत है, लेकिन यह बेहद जटिल संबंधों में फंसे है। जैसे अमेरिका-ईरान के बीच मनमुटाव के कारण भारत के समक्ष अक्सर दुविधा की स्थिति बन जाती है। ईरान को अपने परमाणु कार्यक्रम को लेकर अमेरिका के आर्थिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है। वैसे दोनों ही देशों में सत्ता परिवर्तन हुआ है ऐसी स्थिति में देखना होगा कि अमेरिका-ईरान एक दूसरे के प्रति कैसी नीति और रवैया अपनाते है। ऐसी स्थिति में भारत के समक्ष समस्याएँ और बढ़ जाती है।

भारत की विदेश नीति में ईरान हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है, लेकिन वर्तमान परिदृश्य में उसकी महत्ता और बढ़ गई है। यही कारण है कि ईरान को साधने के लिए भारतीय प्रयास यकायक तेज हुए है। क्योंकि अमेरिका में सता परिवर्तन के कारण डेमोक्रेटिक पार्टी भारत के प्रति अधीक उदार दृष्टिकोण अपनाती है, रिपब्लिक पार्टी की तुलना में इसलिए भारत इस अवसर का लाभ चाबहार प्रोजेक्ट के कार्य में गति लाने के लिए अमेरिका से अधिक रियायत की मांग करेगा जिससे भारत को ईरान पर लगे आर्थिक प्रतिबंधों से बाहर करे। वहीं हाल ही अफगानिस्तान में अमेरिकी सेनाओं की वापसी और तालिबान का काबुल की सत्ता पर कब्जा करने के बाद इसकी अहमियत और अधिक बढ़ जाती है। क्योंकि, अफगानिस्तान में बदलते तेजी से क्षेत्रीय समीकरणों में केवल ईरान ही ऐसा देश है, जिसकी सोच भारत से बहुत मेल खाती है।[10] अफगान अखाड़े में क्षेत्रीय खिलाड़ियों में जहाँ पाकिस्तान और चीन एक पाले में है। वहीं रूस की स्थिति असमंजस व दुविधा वाली है। ऐसे में अफगान सीमा से सटे देशों में ईरान का रूख ही भारत के अनुकूल है। भारत को अफगानिस्तान में अपने व्यापक हितों को सुरक्षित रखने के लिए ईरान का साथ जरूरी है।

अमेरिका भी तालिबान के सत्ता में आने के बाद यह नहीं चाहेगा कि उसकी शक्ति शून्यता को भरने के लिए चीन व अन्य कोई शक्ति उभरे जो उसके हितों के विरुद्ध हो। ऐसे में अमेरिका भी चीन को प्रतिसंतुलित करने के लिए भारत की तालिबानी शासन में पुनः भूमिका देखना चाहता है। इसके स्पष्ट संकेत हमें तालिबान के साथ हुई वार्ता प्रक्रिया में भारत को शामिल करने से दिखता है। अमेरिका भी अपने विश्वसनीय क्षेत्रीय भागीदार की वहाँ उपस्थिति देखना चाहता है। इसके लिए वह भारत को अफगानिस्तान पहुँच के लिए ट्रांजिट रूट विकसित करने व चाबहार प्रोजेक्ट को लेकर नरम रूख अख्तियार करेगा और इस प्रोजेक्ट को आर्थिक प्रतिबंध से बाहर करेगा। अमेरिका की वर्तमान सरकार इस मुद्दे पर अधिक सकारात्मक तरीके से आगे बढ़ सकती है मौजूदा हालातों में जिस तरह से तालिबान के आने के बाद अफगानिस्तान में एक गंभीर मानवीय संकट पैदा हुआ। ऐसी परिस्थिति में अमेरिका, भारत की भूमिका को लेकर अधिक आशान्वित रहेगा।

भारत के लिए चाबहार प्रोजेक्ट का महत्व—चाबहार की भू-रणनीतिक स्थिति के कारण यह बंदरगाह भारत की वैश्विक और क्षेत्रीय पहुँच के लिए काफी अहम है। यह भारत को मध्य एशिया ओर उसके आगे की दुनिया से जोड़ता है। यह नई दिल्ली की अफगानिस्तान में व्यापार और विकास की गतिविधियों में सहायक है। इसके साथ ही चीन द्वारा विकसित ग्वादर बंदरगाह से महज 72 किलोमीटर की दूरी के कारण यह भारत को इस क्षेत्र में चीन की गतिविधियों पर नजर रखने और भारत को घेरने की रणनीति के काट के रूप में सहायता प्रदान करता है।[11] इसके अलावा चाबहार बंदरगाह हिन्द महासागर से ईरान को जोड़ने का सबसे बेहतरीन बिन्दु है और इस कारण यह भारत के हिन्द-प्रशान्त अभियान में भी अहम भूमिका निभाता है।

Source: BBC Research

इण्डिया-ईरान-अफगानिस्तान ट्रांजिट कॉरिडोर

चाबहार बंदरगाह की भौगोलिक स्थिति भारत और ईरान दोनों के लिए आर्थिक और सामरिक रूप से महत्वपूर्ण है। ईरान की दृष्टि से यह बंदरगाह उसकी अर्थव्यवस्था के लिए बेहद अहम है क्योंकि, अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण अर्थव्यवस्था की हालात खराब है। दूसरे मायने से यह अफगानिस्तान में स्थिरता सुनिश्चित करने के नजरिए से भी काम करता है, जो इस क्षेत्र में भारत की विकास पहल के लिए एक पूर्व शर्त है।[12] हाल के वर्षों में नई दिल्ली और तेहरान ''अफगानिस्तान पुनर्निर्माण पहल'' के तहत चाबहार परियोजना पर काम कर रहे है। इस प्रकार पाकिस्तान, अफगानिस्तान और मध्य एशिया को लेकर हितों के अभिसरण यानी इन देशों के हित परस्पर एक दूसरे पर निर्भर होने की कवायद में भारत-ईरान संबंधों में एक नया रणनीतिक आयाम जोड़ा है। इसकी पूरी संभावना है और यही कारण है, कि इस्लामिक गणराज्य भारत में विदेश मंत्रालय के पी.आई.ए. डिवीजन (पाकिस्तान और अफगानिसतान के साथ) के अन्तर्गत आता है, न कि पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका या खाड़ी डिवीजन के तहत।[13] भारतीय-ईरानी-अफगान समझौते के कार्यान्वयन के तुरन्त बाद 18 मई, 2018 को ट्रंप प्रशासन ने एकतरफा रूप से ईरान के खिलाफ तथाकथित परमाणु समझौते के उल्लंघन के आरोप में संयुक्त व्यापक कार्य योजना को वापस ले लिया और आर्थिक प्रतिबंध लगा दिये। इसके साथ ही 2019 में ईरान के साथ व्यापार करने वाले देशों (भारत सहित) को अमेरिका से मिलने वाली रियायतों को खत्म कर दिया, तब भारत को चाबहार बंदरगाह विकास के लिए एक अपवाद मानते हुए इसे अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण पहल के तहत रखा गया।

अमेरिकी कांग्रेस की शोध सेवा (Congressional Research Services, CRS) ने अप्रैल 2021 में एक रिपोर्ट प्रकाशित की। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि, ईरान पर अमेरिका की और से 'कठोर आर्थिक प्रतिबंध' के बावजूद ट्रंप प्रशासन ने अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण के लिए भारत को ईरान के चाबहार बंदरगाह का काम जारी रखने के लिए ''ईरान स्वतंत्रता और प्रति प्रसार अधिनियम'' के तहत अनुमति दी गई।[14] इसमें ईरान के साथ चाबहार बंदरगाह के विकास को लेकर भारत के गठजोड़ को अपवाद के रूप में रखना अफगानिस्तान की स्थिरता सुनिश्चित करने का हिस्सा है।

सी.आर.एस. रिपोर्ट के अनुसार भारत ने इस परियोजना पर साल 2020 के अंतिम महिनों में काम करना बंद कर दिया था। ऐसा क्षेत्रीय उतार-चढ़ाव और कोविड-19 महामारी की वजह से किया गया। हालांकि, बाद में कार्य पुनः शुरू कर दिया और 2021 की शुरूआत, खासकर मार्च-अप्रैल के महीने में जब भारत कोरोना की दूसरी लहर से बूरी तरह प्रभावित था उस वक्त भी चाबहार प्रोजेक्ट का काम जारी था। उम्मीद की जा सकती है कि यह बंदरगाह अप्रैल, 2022 तक चालू हो जायेगा।

हाल ही में भारत के लिए चिंता का विषय यह है कि, भारत के सहयोग के बिना आगे बढ़ने वाली चाबहार-जाहेदान रेलवे लिंक के निर्माण से भारत को अलग कर दिया। यह ट्रांजिट रूट अफगानिस्तान में पहुँचने का वैकल्पिक मार्ग है। अब इस रेलवे लिंक का निर्माण चीन द्वारा किया जाएगा। अभी चीन-ईरान आर्थिक सुरक्षा साझेदारी को अंतिम रूप दिया जा रहा है। ये घटनाएँ अलग तस्वीर पेश करती है जिसने खासतौर पर अफगानिस्तान और मध्य एशिया की और एक भरोसेमंद पहुँच के लिए आशा जगाई थी।

हाल ही में ईरान द्वारा भारत को चाबहार रेल परियोजना से बाहर किये जाने का निर्णय लिया गया है। ईरान ने भारत पर वित्तीयन में देरी का आरोप लगाकर ऐसा निर्णय लिया है। अफगानिस्तान

सहित मध्य एशिया में अपनी पहुँच तथा व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से भारत ने ईरान के चाबहार बंदरगाह को विकसित किया था। इसके साथ ही वहां कई विकासात्मक परियोजनाओं सहित चाबहार के एक रेल परियोजना में भारत की भागीदारी थी, जिसे ईरान द्वारा वित्तीयन में देरी का आरोप लगाकर निरस्त कर दिया गया। यह निर्णय चीन-ईरान समझौते के तुरंत बाद आया है। अब इस रेल परियोजना का निर्माण ईरान स्वयं करेगा। यह रेल परियोजना ईरान के चाबहार से अफगानिस्तान सीमा पर स्थित जाहेदान तक के लिए है। इसके आगे सड़क परिवहन जरांज-डेलाराम राजमार्ग को जोड़ता है जिसे भारत पहले ही बना चुका है। भारत और अफगानिस्तान वर्ष 2019 से इस बंदरगाह से निर्यात कर रहे है। पिछले वर्ष एक अरब डॉलर से अधिक का अफगान माल निर्यात किया गया था, जिसको इस वर्ष के अंत तक दोगुना हो जाने की उम्मीद है। भारत ने 2017, 2019, 2020 और 2021 में अफगानिस्तान को गेहूँ के साथ-साथ चाबहार के माध्यम से कोविड-19 से जुड़ी जीवन रक्षक दवाईयाँ और अन्य सामान की आपूर्ति की जो भारत के मानवीय सहयोग को दर्शाता है।

अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर निहितार्थ

रेल, सड़क और समुद्री परिवहन वाले 7,200 किलोमीटर लम्बे अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर पर भारत, रूस और ईरान ने साल 2000 में सहमति जताई और 16 मई, 2002 को इस परियाजना पर हस्ताक्षर किये।[15] रूस, भारत और ईरान परियोजना के संस्थापक सदस्य देश है। लेकिन 2002 में समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद प्रगति धीमी रही। 18 जनवरी 2012 को नई दिल्ली में हुए एक बैठक में इस परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न तरीकों पर चर्चा की गई। अनुवर्ती रूप में अन्य मध्य एशियाई देशों से समर्थन मांगा गया और अब इसका विस्तार 11 देशों

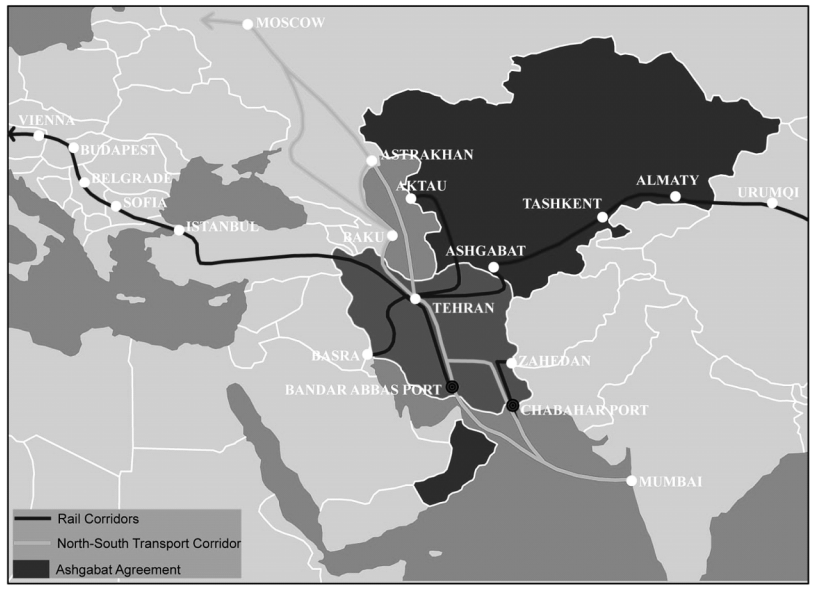

Source: BBC Research

उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर

तक है, जो कि अपनी अलग-अलग भूमिका निभा रहे है।[16] वर्तमान सदस्य भारत, ईरान, रूस, अजरबैजान, कजाकिस्तान, अर्मेनिया, बेलारूस, ताजिकिस्तान, किर्गिस्तान, ओमान, सीरिया, तुर्की, यूक्रेन और बुल्गारिया (पर्यवेक्षक) है।

यह कॉरिडोर हिन्द महासागर और फारस की खाड़ी को ईरान के जरिए कैस्पियन सागर से जोड़ेगा और फिर रूस से होते हुए उत्तरी यूरोप तक पहुँच बनाएगा। इसके तहत ईरान, अजरबैजान और रूस के रेल मार्ग भी जुड़ जाएगें। इस कॉरिडोर के शुरू होने से रूस, ईरान, मध्य एशिया, भारत और यूरोप के बीच व्यापार को बढ़ावा मिलेगा और वस्तुओं की आवाजाही में समय और लागत की बचत होगी। इस कॉरिडोर की अनुमानित क्षमता हर साल 20 से 30 मिलियन टन माल की आवाजाही है।[17]

उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर का उद्देश्य

इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर (International North-South Transport Corridor—INSTC) सदस्य राज्यों के बीच परिवहन सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 7,200 कि.मी. लम्बा जमीनी और सामुद्रिक रास्ता है। इसमें परिवहन के रेल, सड़क और समुद्री मार्ग शामिल है। INSTC केन्द्रीय एशियाई भू-आबद्ध देशों के लिए समुद्री पहुँच बढ़ाएगा।[18] इसके जरिए समय और लागत में कटौती कर रूस, ईरान, मध्य एश्यि, भारत और यूरोप के बीच व्यापार को बढ़ावा दिये जाने का लक्ष्य है। इस नेटवर्क से यूरोप और दक्षिण एशिया के बीच व्यापारिक गठजोड़ में तेजी एवं ज्यादा कुशलता की उम्मीद की जा रही है।

उत्तर-दक्षिण कॉरिडोर पर चीन का रवैया

- INSTC के देशों के बीच चीन को प्रतिसंतुलित करना क्योंकि, जिस तेजी से चीन अपनी इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के माध्यम से दुनिया का नक्शा बदलता जा रहा है उसे देखते हुए इन देशों के पास कोई विकल्प नहीं बचता है।
- चीन ने जिस तरह से अपनी महत्वाकांक्षी बेल्ट रोड़ एनिशिएटिव (BRI) द्वारा दुनिया के विभिन्न प्रदेशों को जोड़ने की कोशिश की है उसमें कहीं-न-कहीं अन्य देश पिछड़ते जा रहे है।
- चीन जहाँ अपनी वन बेल्ट वन रोड़ (OBOR) पहल के जरिये यूरोप के साथ स्मूथ कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने की कोशिश में है तो वहीं, भारत INSTC के जरिये सुदूर मध्य एशिया और यूरेशियाई क्षेत्रों तक अपनी बेहतर पहुँच सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहा है।
- OBOR चीन की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है इसके जरिए चीन ने विभिन्न देशों के साथ-साथ दुनिया के ऐसे क्षेत्रों को भी जोड़ने की कोशिश की है जहाँ कनेक्टिविटी की समस्या थी। अगर हम सेंट्रल एशिया और पूर्वी यूरोप की बात करें तो ऐसा माना जाता था कि ये वैश्वीकरण की प्रक्रिया से कट गए। एक तरफ जहाँ आर्थिक वैश्वीकरण से पूरी दुनिया को फायदा हो रहा था, वहीं कुछ ऐसे क्षेत्र भी थे जो अलग-थलग पड़ गए। चीन ने OBOR के जरिए इन सबको जोड़ने की कोशिश की।

उत्तर-दक्षिण गलियारा और रूस-ईरान का महत्व

रूस के नजरिये से देखें तो रूस का यूरेशियन ड्रीम है। रूस अपने को यूरोप से कुछ लिहाज से अलग-थलग नहीं देखता है। हालांकि, क्रीमिया को लेकर इनके बीच कुछ मतभेद है। जिसको लेकर EU तथा रूस अलग-अलग रूख अख्तियार करते है, लेकिन रूस को एक यूरेशियन ड्रीम जरूर है जिसको वह आगे रखना चाहता है।[20] इसके लिए ताकत के साथ कनेक्टिविटी की आवश्यकता होगी और ईस्ट यूरोपियन देशों का सहयोग भी। भारत INSTC के माध्यम से शिक्षा, बैंकिंग इंश्योरेंस, टेक्नोलॉजी, हॉस्पिटैलिटी तथा मेडिकल आदि क्षेत्रों में निवेश को बढ़ाना चाहता है।[21]

रूस और ईरान में चीन की उपस्थिति भी बहुत महत्वपूर्ण है। रूस के साथ चीन के संबंध घनिष्ठ हो गए है (अमेरिकी नीतियों के कारण)। अभी इसे रणनीति के तौर पर देखा जा रहा है। ईरान से पश्चिमी देश संबंध तोड़ रहे है उस रिक्त स्थान को चीन भर रहा है। रूस और ईरान को लगातार पश्चिम के आर्थिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में व्यापार के लिए चीन और भारत की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

उत्तर-दक्षिण गलियारा और भारत के हित

INSTC का भारत के नजरिये से आर्थिक और सामरिक महत्व है। क्योंकि इस कॉरिडोर के माध्यम से भारत अफगानिस्तान, मध्य एशिया के देशों कजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान तथा तुर्कमेनिस्तान तक अपनी पहुँच बढ़ा सकता है। इन देशों के साथ भारत के सामरिक संबंध भी है। इन देशों के साथ हमारा कोई लैंड-बॉर्डर नहीं है। भारत के लिहाज से वहाँ अपनी उपस्थिति दर्ज कराना बहुत महत्वपूर्ण है। यही वजह है, कि भारत इसमें तेजी दिखा रहा है। यहाँ से भारत चीन पर भी नजर रख सकता है और काबुल की सत्ता में वापसी के बाद आए तालिबान की गतिविधियों पर भी निगरानी रख सकता है।[22]

भारत का मध्य एशियाई देशों और रूस के साथ आर्थिक संबंध बहुत कमजोर है। हमें परिवहन लागत को कम करना तथा ट्रेड वॉल्यूम को बढ़ाना है। जिसके लिए INSTC बेहतर माध्यम हो सकता है। वर्तमान सरकार ने एक्सटेंडेड नेबरहुड पर अधिक बल दिया जिससे इन देशों के साथ व्यापार तथा घनिष्ठ संबंध बनाए जाए। सेंट्रल एशिया के साथ पूर्वी यूरोप के अधिकांश देश लैंड लॉक्ड देश है। इनमें कोई समुद्री मार्ग नहीं है। इस कॉरिडोर के संचालन से व्यय तथा समय की बचत होगी जिससे भारत को लाभ होगा।[23]

भारत को अपने सामरिक और रणनीतिक हितों को ध्यान में रखते हुए INSTC के जरिए OBOR को चुनौती देने के लिए तैयार रहना होगा। हमें व्यापारिक संबंध सिर्फ उन्हीं देशों से बढ़ाने की जरूरत नहीं है, जिनके साथ मिलियन डॉलर के व्यापार होते आ रहे है बल्कि हमें उन अर्थव्यवस्थाओं को भी साथ लेना होगा जो हमारे से घनिष्ठ संबंध रखना चाहते है।

भारत इसलिये INSTC में रुचि ले रहा है क्योंकि मध्य एशिया के देशों के साथ हमारे सांस्कृतिक, व्यापारिक तथा ऐतिहासिक संबंध है, परन्तु पाकिस्तान के अवरोध तथा बेहतर इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी के कारण भारत इन संबंधों को आर्थिक रूप से नहीं भुना पा रहा है। जहाँ भारत तथा मध्य

एशियाई देशों के साथ व्यापार मात्र 1.5 बिलियन डॉलर है। वहीं चीन से मध्य एशियाई देशों का व्यापार 13 बिलियन डॉलर है। भारत सभी देशों को विकल्प दे रहा है, तथा उन तक पहुंचने का प्रयास कर रहा है क्योंकि, ये सभी देश भारत के लिए महत्वपूर्ण है। यहाँ से भारत ऊर्जा संसाधनों यथा तेल, गैस तथा यूरेनियम की आपूर्ति कर सकता है।[24]

अत: INSTC कॉरिडोर भारत के लिए आर्थिक आयामों के साथ-साथ सुरक्षा आयामों को भी पूरा करेगा। हाल ही अफगानिस्तान में तालिबान के सत्ता में वापसी के बाद यह क्षेत्र भारत के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। भारत ने पहले ही अश्काबाद समझौते पर हस्ताक्षर कर अपनी INSTC के प्रति दृढ़ता प्रकट कर दी है। भारत सभी देशों के साथ इस कॉरिडोर का इस्तेमाल करना चाहता है, ताकि सभी देशों के साथ अच्छे सबंध स्थापित हो सके।

निष्कर्ष—चाबहार परियोजना और INSTC भारतीय संपर्क को एक बड़े वैश्विक खिलाड़ी के रूप में पेश करने की आदर्श शुरुआत है। इसका भविष्य काफी उज्ज्वल दिखाई देता है। कुछ ही समय में यहाँ पर वाणिज्यिक आवागमन शुरू हो जाएगा जिससे सभी देशों को न सिर्फ व्यापारिक बल्कि सामरिक नजरियों से भी लाभ होगा। इसलिये पक्षकारों को सभी संभावनाओं के साथ-साथ INSTC से जुड़े बुनियादी प्रश्नों पर विचार करना चाहिए।

संदर्भ

1. Strategic Analysis, "Iran : India's Gateway To Central Asia" Page-957-975, November 23, 2012, Volume-36.
2. Hindusthan Times, India, "Iran And Afghansthan Sign Chabahar Port Agreement" May 24, 2016.
3. Mea.Gov.In, "First Trilateral Working Group Meeting Between India, Iran And Uzbekistan On Joint Use Of Chabahar Port" December 14, 2020
4. Scrol.In, August 16, 2021
5. IRNA, August 24, 2021
6. Bloomberg, "Modi Ties India-Backed Iranian Port to Central Asia's Fortunes" September 17, 2021
7. Iranian Labour News Agency, "Iranian Drivers Not Allowed To Travel In Turkmenistan", May 23, 2021.
8. Tasnim News, September 17, 2021
9. Indian Express, "Iran President-Elect Invities India For Swearing In Event", July 10, 2021
10. BBC World Service News "How The Taliban Stormed Across Afghanisthan In Ten days", August 16, 2021
11. The Print, " Chabahar Port Is Not Against China Or Gwadar", April 16, 2021.
12. MEA, "Junction Kabul : The Rouet To Peace", External Affairs Minister Participates In A Panel Discussion At The Raisian Dialogue 2021, April 16, 2021.

13. PR Kumerraswamy, "Is India Playing A Triangular Tangu With Iran?" The News Indian Express, July 14, 2021.
14. Congressional Research Services (2021), Iran Sanctions Prepared For Members And Committees Of Congress, April 6, 2021.
15. The Economic Times, "India-Eurasia Road Almost Ready, Container Dry Run Soon" November, 2018
16. Russia & India Report. November 29, 2012 "Transport Corridor Of Fers Many Opportunities For Indo-Russian Trade".
17. The Economic Times, "INSTC Connects Europe With India For First Time" June 24, 2021
18. Gurt. Marat, "Landlocked Central Asia Gets Shorter Railway Link To Persian Gulf", Page No. 27.
19. Business Standard, "An India-Russia Corridor Could Be New Delhi's Answer To China's OBOR" May 15, 2017
20. Asian Development Bank, UKAID/Department Of International Development (DFID) JICA, Wold Bank "The Web Of Transport Corridors In South Asia". August, 2018.
21. http://www.instc
22. The Economic Times, "Afghanistan likely to Relapse Into Hotbed Of International Terrorism", September 10, 2021
23. Zafar Athar, "India-central Asia : finding New Synergies For Greater Engagement", ICWA Policey Brief, July 9, 2015.
24. Meena Singh Roy, " India's interests in central Asia", Strategic Analysis, 2001, Vol. XXIV, No. 12
25. The Indian Express, "India Joins Ashgabat Agreement, February 2, 2018.

❑❑

रूबी चौधरी (शोध छात्रा)
डॉ. अंजू चौधरी (प्रोफेसर)
प्राचार्य
महिला महाविद्यालय, किदवई नगर, कानपुर

ATISHAY KALIT
Vol. 9, Pt. A
Sr. 15, 2022
ISSN : 2277-419X

समकालीन भारतीय कला परिवेश में महिला कलाकारों की स्थिति

सारांश— *भारतीय समकालीन कला को किसी भी दायरे मे नही बांधा जा सकता खासकर अब जबकि कला ग्लोबल हो गयी है। समकालीन कला एक ऐसे मानसिक परिवेश की उपज है, जो पूर्णतया पश्चिमी है, परन्तु इसका प्रभाव विश्व के हर भाग पर पड़ा। इस प्रभाव से भारत भी अछूता नहीं रहा। समकालीन कला के अभिव्यंजक रूपाकारों तथा निहितार्थ ऊर्जा ने वर्तमान कला के विकास और पूरे विश्व की कला को दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नए प्रयोगों, नए रूपकारों, नए औजारों तथा नए संवेदनों के साथ प्रयोग करने से समकालीन कला लोगों के जीवन का अभिन्न अंग बन गयी है और समाज मे उसकी एक सुनिश्चित भूमिका हो गयी है। समकालीनता के प्रति वर्तमान अभिव्यक्ति का स्रोत निसंदेह: पश्चिम है, लेकिन दुनिया अब इतनी सिमट गयी है कि ऐसे प्रभाव विश्वव्यापी स्वरूप लिए होते है और समकालीन उपलब्धियों का महत्व अब किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रह गया है। समकालीन कला ने चित्रकारों की कृतियों को बिना किसी लिंग भेदभाव क सटीकता प्रदान की है। महत्वपूर्ण नवाचार के फलस्वरूप कलाकारों को कलात्मक व रंग सम्बन्धी संवेदन के क्षेत्रों मे स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है। इससे नए परिदृश्य खुले है विजातीय तत्वों के स्वीकार की तरफ उसकी पहुँच बढ़ी है। इसी कड़ी में समकालीन कला आज एक ऐसे परिवेश में है जहाँ बदलाव की लहर है जिसमें महिला कलाकारों की महत्वपूर्ण भूमिका है।*

समकालीन कला को आज अनेक स्तरों पर अनेक माध्यमों मे देखा जा सकता है और यह बहुत जटिल भी है। समकालीन कला के आरम्भ की कोई निश्चित तिथि भी निधार्रित नहीं की जा सकती। यद्यपि मौटेतौर पर यह माना जाता है कि इसने 20वीं शताब्दी के आरम्भ से ही एक गंभीर आन्दोलन का रूप ले लिया था। यह युग राजनैतिक आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से बड़ा उथल-पुथल भरा था। जनसाधारण के उत्थान व अभिजात वर्ग के पतन भौतिकवाद के विकास व बड़े बाजारों के खुल जाने तथा ऐसी ही अन्य

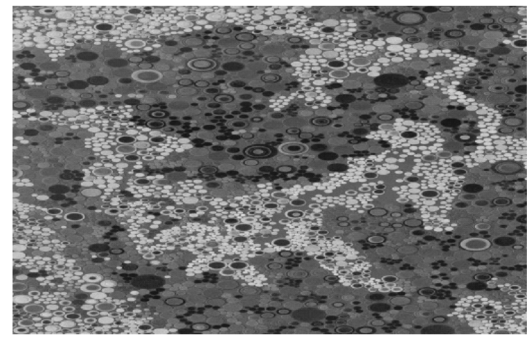

Bharti Kher *The skin speaks a language not its own*, 2006, fibreglass, bindis, 142 × 456 × 195 cm, Courtesy Gallery Nature Morte, Photo © Pablo Bartholomew

परिवर्तनात्मक शक्तियों ने परम्परा से टूटने की प्रेरणा दी। औधोगिक विकास तथा तकनीकी उन्नति की वजह से शहरी केन्द्रों एवं व्यक्ति व समूह के बीच अपने वाले नए सम्बन्धों को विकसित होने का मौका मिला। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी मनुष्य ने अपनी जो छवि बना रखी थी विज्ञान की क्रान्तिकारी खोजो के फलस्वरूप उसमें भारी बदलाव आ गया था कलाकारों के लिए तो सम्पूर्ण नया क्षितिज खुल गया था। कलाकार ने अभिव्यक्ति की तलाश मे अपनी सामाग्री की विशिष्टता को बहुत अधिक महत्व देना शुरू कर दिया।

समकालीन कला में मौलिक अभिव्यक्ति के प्रयासों को विफल व कुठिंत करने वाली परम्पराओं के भारी बोझ को चुनौती दी गयी है। आधुनिकता ने कलाकारों के लिए रंगो को नए तरीके से देखना संभव किया है और उसकी कला शैली को एक नया परिवेश देने का समर्थपूर्ण कार्य किया है। भारतीय कला संगीत, नृत्य रंगमंच, साहित्य और अन्य कलाओं की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर पर गर्वित होना सहज और स्वभाविक है। हमारे समाज के परिवर्तनशील विचारों ने उदारवादी और कल्पनाशील विचारों को पंख प्रदान करने का सतत् प्रयास किया है और कलाकार की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को नये क्षितिज प्रदान करके एक प्रोत्साहन भरा रास्ता खोल दिया है। आज पूरा विश्व सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ रहा है जिसमें महिलाओं की भागीदारी पुरूषों के समान आंकी जाती है, चाहे वह किसी भी स्तर पर क्यों न हो। आज महिलाएँ सशक्त और सुदृढ है जिसका उदाहरण हमें कला के क्षेत्र मे भी देखने को मिलता है। पहले के इतिहास पर यदि गौर किया जाए जो आज भारतीय कला मे ही नहीं अपितु पूरे विश्व की कलाओं में महिला कलाकारों की भागीदारी बढ़ी है।

भारतीय समकालीन कला मे महिला कलाकारों की भूमिका आज एक सशक्त रूप ले चुकी है। 1970 के दशक मे नारीवाद के दौरान महिला कलाकारों का जुड़ाव अचानक विशिष्ट हो गया। यदि एक महिला के तौर पर देखा जाए तो कला में उनका कार्य एक नारीवाद तक ही सीमित नहीं था। समकालीन कला मे भारतीय महिला कलाकार अपने इरादे और अभिव्यक्ति को नई दिशाओं मे ले जा रही है। पहले से यदि तुलना की जाए तो वर्तमान मे महिला कलाकारों की समकालीन परिवेश मे मजबूत स्थिति है न केवल संख्यात्मक रूप से अपितु कार्यात्मक रूप से भी महिला कलाकारों की स्थिति अत्यधिक सशक्तपूर्ण है। वे आज न केवल समाज मे अपितु देश व विश्व में उन्नत कलात्मक विकास का भी अभिन्न हिस्सा है।[1]

भारतीय कला जैसे कि हम देखते है कि प्राचीनकाल से ही महिला कलाकारों की संख्या पुरूष कलाकारों की अपेक्षा बहुत कम हो रही है। पहले के समय मे परिस्थितियां अलग थी लोगों की सोच विकसित नही थी। महिलाओ को सदैव घर मे ही रखा जाता था और यदि कोई महिला बंधनों से बाहर आना चाहती तो इसे समर्थन नहीं मिलता था । पुरूष प्रधान सोच वाले समय में कुछ महिला कलाकार ऐसी रहीं जिन्होने अपने स्वयं की पहचान बनाने का प्रयास किया और वे उसमे सफल भी रही, किन्तु उतनी नहीं जितनी आवश्कता थी। उदाहरण के तौर पर यदि देखे तो बात मुगल शैली से ही ले जहाँ अकबर, जहाँगीर, और शहाजहाँ के काल में जितने भी कलाकार प्रसिद्ध हुए वे सभी पुरूष थे। साहिफा बानू, नादिरा बानू, रूकईया बानू, को आज कला के क्षेत्र में कुछ ही लोग जानते है। यही स्थिति मंगलाबई की रही जो चित्रकला के भगवान स्वरूप माने जाने वाले राजा रवि वर्मा की बहन थीं लेकिन उनसे व उनके कलाकार्यो से सीमित लोग ही परिचित है। दक्षिण के कुछ निजी संग्रहालयो

में ही उनकी कला सिमट कर रह गयी। भारत मे पुर्नजागरण की बात की जाती है तो टैगोर परिवार का नाम आता है तथा उनके साथ प्रसिद्ध पुरूष कलाकारों अवनीन्द्रनाथ, गगनेन्द्रनाथ, रवीन्द्रनाथ आदि का नाम लिया जाता है किन्तु उन्हीं के परिवार की सुनयनी देवी, प्रतिभा देवी, रानी चंदा, अटासी बरूआ जोकि कला प्रतिभा की धनी थी उनका वर्णन नगण्य ही मिलता है। इन महिला कलाकारों के प्रति कला आलोचक, प्रसिद्ध कलाकारों, कला पुस्तकों, लेखों शोध आदि मे भी उदासीनता झलकती है। शायद यह कहीं-न-कहीं पुरूष सत्तात्मक सोच का ही परिणाम है कि इन महिला कलाकारों को वह स्थान नही मिल पाया जो इनके साथ के अन्य पुरूष कलाकारों को मिला। भला हो उन कुछ कला के लेखकों को जिन्होनें अपने लेखों व पुस्तकों मे इनके जीवन व कार्यो का वर्णन किया ताकि इनकी पहचान विलुप्त न हो और भविष्य की कला पीढ़ी इनके बारे मे जान सके।

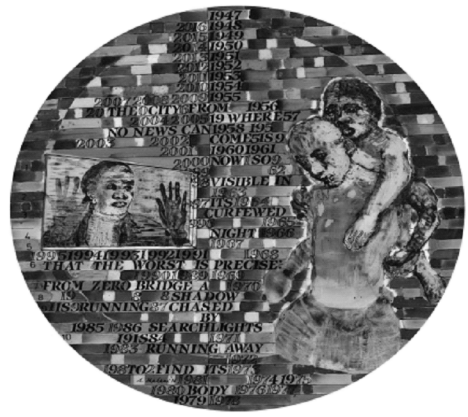

Nalini Malani, ***All We Imagine as Light. The City from Where No News Can Come*****, 2016, painted tondo on the reverse, Ø 112 cm, © Anil Rane**

समय के साथ परिवर्तन हुए औधोगिक क्रान्ति आई, व्यक्ति का वैचारिक परिवर्तन हुआ स्थिति में सुधार होना प्रारम्भ हुआ। स्वतन्तत्रा के पश्चात् भारतीय कला जगत में पश्चिम की धमक बढ़ी। कलाकारों का आपसी आदान-प्रदान बढ़ा। देश मे कला विद्यालयों की स्थापना हुई जिसमे बिना किसी लिंग भेदभाव के कला शिक्षा का प्रसार हुआ। धीरे-धीरे स्थिति में बदलाव आये व्यक्ति की संकुचित सोच में आधुनिकता आई। अब कला शिक्षा के प्रति जन-मानस का व्यवहार बदला। कला के प्रति लोगों की सोच मे सकारात्मक परिवर्तन हुआ जिसका परिणाम यह हुआ कि कला की शिक्षा मे महिलाओं की बढोत्तरी हुई। संसाधन बढ़े, दीर्घाओं मे भीड़ आनी शुरू हुई। कलात्मक कार्यो का सही मूल्यांकन शुरू हो इसके लिए कला आलोचकों की भी संख्या बड़ी व उनका कला के प्रति व्यवहार भी नम्र हुआ। महंगी कृतियाँ भी आम लोगों तक पहुँचने लगी। आधुनिकता के प्रवेश ने कला में नव जागृति का निर्माण किया। कलाकारों ने स्वतन्त्र रूप से विचार करना आरम्भ किया व बिना किसी भेदभाव के अपना चित्रण कार्य आरम्भ किया। अब कलाकृतियों के आधार पर कलाकार को जाँचा-परखा गया न कि लिगांत्मक आधार पर।

समकालीन कला तक आते-आते यह स्थिति अधिक संतोषजनक हो गई है। आज बिना किसी भेदभाव के कला दीर्घाएँ, विद्यालय, पत्रिकाएँ इत्यादि कला गतिविधियों के बारे में बताते है। यद्यपि आज वर्तमान में इतना परिर्वन आया है और महिला कलाकारों के विचार भी आधुनिक हो गये है। कुछ महिला कलाकार है जो स्त्री और पुरूष के भेदभाव वाले व्याख्यान से सहमत नहीं है उनके अनुसार एक कलाकार केवल कलाकार होता है यदि उसका सृजन अच्छा है और श्रोता को अपनी ओर आकर्षित करता है तो उसे कोई फर्क नही पड़ता कि उक्त चित्र किसके द्वारा निर्मित किया है स्त्री चित्रकार द्वारा

या पुरूष चित्रकार द्वारा। कलाकार को उसके कार्यो द्वारा आंका जाना चाहिए। वर्तमान मे महिला कलाकार सामाजिक, मानवीय, दैनिक, राजनीतिक हर वर्ग को ध्यान मे रखकर चित्रण कार्य करती है। गंभीर से गंभीर समस्याओ को भी वे अपने चित्रण कार्य मे व्यक्त करती है और समाज को आईना दिखाने का प्रयास करती है। समकालीन भारतीय कला की एक महत्वपूर्ण दिशा बड़ी संख्या मे महिला कलाकारों की उपस्थिति है। शायद ही दुनिया मे कही इस तरह की सार्थक और सक्रिय उपस्थिति खोजी जा सकें। जिस देश की आधुनिक कला अपनी शुरूआत अमृता शोरगिल से मानती हो वहाँ महिला कलाकारो को विशेष स्थान प्राप्त होना लाजमी है। समाकालीन भारतीय कला परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा महिला कलाकारों की अदभुत कल्पनाशक्ति की देन है।[2]

भारतीय समकालीन कला मे महिला कलाकारों ने कला के क्षेत्र मे स्वंय को मजबूत स्थिति में लाकर खड़ा किया है। वे स्वंय इतनी सशक्त हो चुकी है कि अपने दम पर उन्होनें राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। उन्होनें अपने कलाकार्य के बल पर समकालीन कला को नए आयाम दिए है। समकालीन परिवेश मे परिवर्तन के साथ-साथ कलाकारों के विचारों मे भी परिवर्तन आए जिनका प्रभाव उनके कार्यो पर देखा जा सकता है। अर्पणा कौर जैसी महान कलाकार जिन्होने अपने जीवन मे दंगों, सामाजिक कुरूतियों, हिंसा इत्यादि का दंश देखा। उनकी कृतियों मे यह सब विषय दिखाये गये है जो दर्शक को सोचने पर मजबूर कर देते है कि उस समय सामाजिक स्थिति में बहुत उथल-पुथल थी जो उनके कार्यो मे देखी जा सकती है। कला के प्रति इनके प्रेम को इसी बात से स्पष्ट किया जा सकता है कि उनके रंगों व तकनीक मे कही भी संकुचन नही दिखता। उन्होनें समकालीन परिवेश में अपनी स्थिति को अधिक शक्तिशाली बनाया और वर्तमान में वे अपना कार्य निरन्तर रूप से कर रही है तथा जिन लोगों को शिक्षा का अभाव है या जो महिलायें सामाजिक रूप से पिछड़ेपन का शिकार है उन्हें सशक्त करने का प्रयास कर रही है। कौर के अनुसार महिला कलाकारों के लिए संघर्ष अधिक है किन्तु वे अपनी स्थिति को बदलने मे पूर्णत: सक्षम है।[3]

Sheela Gowda, *Gallant Hearts*, 1996, cowdung, pigment, string, 300 x 37.5 x 20 cm approx, Courtesy Galleryske © Sheela Gowda

समकालीन कला परिवेश में अंजलि इला मेनन तथा गोगी सरोजपाल ऐसी महिला कलाकार है जो स्त्री के चित्रण को विभिन्न घटनाओं के माध्यम से उसे शक्ति के रूप मे चित्रित किया है।[4] केवल चित्रकला के क्षेत्र मे ही नहीं अपितु कला के अन्य स्वरूपों जैसे मूर्तिकला, छापाकला, संस्थापन कला जैसी कला विधाओ मे भी महिला कलाकारों ने अपनी छाप छोड़ी है। मूर्तिकला मे मीरा मुखर्जी ने बस्तर के जनजातीय जीवन मे जाकर वहाँ की कला का अध्ययन किया और फिर उसे अपने कार्य का विषय बनाया। मृणालिनी मुखर्जी जो जूट और रस्सी जैसे साधारण सी वस्तुओं को अपने मूर्तिशिल्पों मे प्रयोग करती है उनसे ऐसे शिल्प निर्मित करती है, जो कठिन विषयों को आसानी से रूप दे देती है। अनुपम सूद जो कि छापाकार है उन्होनें मानव के मानसिक जकड़न और कसमसाहट को विसंगत परिस्थितियों को उजागर

किया है। नलिनी मलानी जो आज विश्व विख्यात कलाकार बन चुकी है उनके चित्रों मे भी राजनैतिक सामाजिक मुद्दे प्रखर हो उठते है। बिन्दी जैसी सूक्ष्म वस्तु से विशाल आकार के शिल्पों का निर्माण किया जा सकता है। यह किसी ने सोचा नहीं होगा किन्तु भारती खैर जो कि संस्थापन कलाकार है उन्होनें इसी वस्तु को लेकर अपने भव्य शिल्प व चित्राकृतियाँ बनाई, जो भव्य और आकर्षक है। गोबर मिट्टी जैसे जैविक पदार्थ के साथ प्रयोग करने वाली शीला गाउडा ने अपने संस्थापनों के माध्यम से गाँव का एहसास कराया है।[5] समकालीन महिला कलाकारो को माध्यम व सोच की स्वतन्त्रता के कारण कला का वातावरण सुगम व सुलभ हो गया है। महिला कलाकारो की बढती ख्याति चाहे व राष्ट्रीय स्तर पर हो या अन्तराष्ट्रीय स्तर पर समाज के प्रति जागरूक रवैया हो राजनीतिक व आर्थिक उथल-पुथल पर उनकी स्पष्ट दृष्टि हो या माध्यमों का प्रयोग वे स्वतन्त्रतापूर्वक विचरण से वे भारतीय समकालीन कला परिवेश मे अपनी सुदृढ़ स्थिति को स्थापित करती है।

समकालीन कला परिवेश मे आज समस्त विषयों समस्याओं, जिज्ञासाओं तथा प्रेरणाओ का श्रोत जीवन है। किसी भी सृजनात्मक रचना के मूल मे हम जीवन के अनुभव भाव-अनुभाव, पीड़ा, हर्ष-उल्लास तथा कोलाहल आदि को देख सकते है। सृजन क्रम मे प्रवृत भारतीय महिला कलाकार जीवन की अनेक चुनौतियों को स्वीकार करती है। समकालीन कला का यह वातावरण जीवन की नवीनताओं, समसामयिक सृजनात्मक सम्भावनाओं, गहन संवेदनाओ तथा वैचारिक शक्ति के साथ जीवन को समझने का प्रयास महिला कलाकार करती है जो उनके चित्र कार्यो मे प्रदर्शित होता है। महिला कलाकार अब एक माध्यम तक ही सीमित नही है वरन् वे धातु, काष्ठ, रेत, रासायनिक रंगो तथा विविध मिश्रणो के माध्यम से कलाकृतियों को नया रूप देने मे सक्षम है।

संदर्भ

1. मागो, प्राणनाथ, भारत की समकालीन कला (एक परिपेक्ष्य), नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, 2006 पृष्ठ सं0- 7,8,9
2. भारद्वाज, विनोद कला चित्रकला, प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ सं0-16
3. समकालीन कला पत्रिका, ललित कला अकादमी, दिल्ली, 2008, अंक-35, पृष्ठ सं0-41-42
4. समकालीन कला पत्रिका ललित कला अकादमी दिल्ली 2006 अंक-28 पृष्ठ सं0-35
5. कला दीर्घा, अक्टूबर 2003, वर्ष-4, अंक-7, पृष्ठ सं0-14,15,16

❑❑

गोविन्द सरकार (जे.आर.एफ.)
शोधार्थी, संस्कृत विभाग
रायगंज विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल

ATISHAY KALIT
Vol. 9, Pt. A
Sr. 15, 2022
ISSN : 2277-419X

वेद में दन्त चिकित्सा

शोधसार

आज चिकित्सा शास्त्र का क्षेत्र बहुत बढ़ राहा है। डाक्टारों और वैद्य की भरमार है। इसी अधिकता को दिखाने के लिये एक उक्ति प्रसिद्ध है कि प्रत्येक डाक्टर अपने साथ एक नवीन बीमारी लेकर अता है। इसी कारण आज केवल चिकित्सा शास्त्र में ही अनेक लोग चिकित्सा के एक दो विषय में अपने को पूर्ण विद्वान् बनाना चाहते हैं। एक मनुष्य केवल दांतों का विज्ञान प्राप्त करने के लिये अपनी जिन्दगी समाप्त कर देता है और दूसरा केवल त्वक् रोगों का अध्ययन करता है। तात्पर्य यह है कि आज प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार से लोगों को यह दिखाना चाहता है कि अमुक रोग का सब से अच्छा चिकित्सक मैं ही हूं। परन्तु वास्तव में वे कितने गहरे पानी तक होते हैं यह अनुभव से ही पता लगता है। उन्हीं विशेषज्ञों में से दन्त चिकित्सक के सम्बन्ध में प्रस्तुत शोध पत्र में प्रकाश डाला गया हैं।

संकेताक्षर—चिकित्सा शास्त्र, चिकित्सक, दन्त, रोगी, सुवर्ण, वेद।

आज, जब कि दातों का विज्ञान पर्याप्त उन्नति को पहुंच गया है, कोई दांतों के भयंकर रोगों से पीड़ित व्यक्ति, किसी दन्त चिकित्सक के पास जाए, तो दन्त चिकित्सक के पास केवल एक ही उपाय है और वह यह है कि रोग से खराब हुए दांतों को निकाल कर उनके स्थान पर वह दूसरे कृत्रिम दांत लगा दे। उसके पास ऐसी कोई चिकित्सा नहीं जिससे कि वह इन रोगों को शरीर से निकल कर फैंक सके।

यह हाल केवल इसी क्षेत्र में ही नहीं, प्रत्युत सब क्षेत्रों में है। यह बात नहीं कि इन रोगों की चिकित्सा ही नहीं है। चिकित्सा अवश्य है, पर पता लगाने की आवश्यकता है। इन की चिकित्सा केवल एक पुस्तक में है, जो कि पाश्चात्यों के मत में गड़रियों ने बनाई है, परन्तु हमारे मत में उस के द्रष्टा ऋषि हैं, और वह है 'वेद' - ''सर्वज्ञानमयो हि सः''[1]। जो कि सब विद्याओं की खान है, कभी समाप्त न होने वाली है, आदि से ही जो पूर्ण है और सदा पूर्ण ही रहती है।

---

1. मनुस्मृतिः - 2/7

यह तो स्पष्ट ही है कि आयुर्वेद के ग्रन्थों में सुवर्ण की कितनी महिमा है। रस तरंगिणी के पंचदश तरंग में सुवर्ण का बहुत सुन्दर वर्णन है। यथा—

''विशुद्धं कनकं घृष्टं विषबाधविनाशनम्।
मधुरं शीतलं नेत्र्यं गर्भस्थापनमुश्रमम्॥
पिश्रामयप्रशमनं हृद्दौर्बल्यहरं परम्।
अन्यभेषजसाहाय्यात् करोति विविधान् गुणान्॥
सुवर्णचूर्ण परिशीलयन्तो धात्रीस्थिराविश्वपुनर्नवाभिः।
अदृश्य देहाः बलिभिर्भवन्ति तारुण्यलावण्यविलासपूर्णाः॥''[1]

अर्थात् 'शुद्धस्वर्ण को घिसकर सेवन करने से शरीरगत अनेक प्रकार के विष प्रभाव नष्ट हो जाते हैं। यह मधुररस शीतवीर्य, नेत्रों के लिये लाभदायक, गर्भाशय की गर्भधारण शक्ति को बढ़ानेवाला है। पित्त प्रकोपजन्य दाह आदि रोगों को शान्त करता है। स्वर्ण हृदय की दुर्बलता को हटाने में सर्वोत्तम औषधि है। स्वर्ण को अन्यान्य औषधियों में मिलाकर प्रयोग से अनेकविध लाभ हो सकते हैं। आमलकी, शालपर्णी, सोंठ तथा पुनर्नवाचूर्ण अथवा इनके कषाय से स्वर्णभस्म सेवन करने से मनुष्य अधिक वलवान् तथा देखने में युवा और सुन्दर स्वरूप हो जाता है।'

इसी स्वर्ण को, वेद ने दांतों की सब से अच्छी चिकित्सा बताया है। आज भी बहुत से हिन्दु अपने दांतों के ऊपर स्वर्ण का पत्र मंढ़वा लेते हैं। यह प्रथा यद्यपि आज कल केवल शौक के लिये ही हो गई है, परन्तु यह हितकर है। प्राचीन काल में जब यह प्रथा प्रारम्भ हुई थी तब चिकित्सा की दृष्टि से ही प्रारम्भ हुई थी।

ऋग्वेद के 5 वें मण्डल के दूसरे सूक्त में निम्न लिखित दो मन्त्र आते हैं। यथा—

''हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमारात्क्षेत्रादपश्यमायुधा मिमानम्।
ददानो अस्मा अमृतं विपृक्वत्किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुक्थाः॥
क्षेत्रादपश्यं सनुतश्चरन्तं सुमद्यूथं न पुरु शोभमानम्।
न ता अगृभ्रन्नजनिष्ट हि षः पलिक्नीरिद्युवतयो भवन्ति॥''[2]

इन दोनों मन्त्रों में उन दांतों का वर्णन किया गया है जिन दांतों में स्वर्ण लगा हुआ है। श्रुति कहता है कि (हिरण्यदन्तं) स्वर्ण जटित दांत, (शुचिवर्ण) श्वेत तथा शुद्धवर्ण के होते हैं (आरात् क्षेत्राद् अपश्यम्) उन दांतों को मैंने बहुत दूर क्षेत्र से देखा है (आयुधा मिमानं) वे इतने तेज हैं कि मानों अपने को अस्त्र बना रहे हैं (विपृक्तत् अस्मा अमृतं ददानः) वे व्यायाम की तरह हमें भोजन को चबाकर, पीसकर अमृत देने वाले हैं।

इस प्रकार प्रथम मन्त्र के प्रथम तीन चरणों में यह बताया गया है कि यदि स्वर्ण को दांतों में जड़वा लिया जाय तो दांत शुद्ध तथा मजबूत हो जाते है और उन को कोई रोग विकृत नहीं कर सकता।

---

1. रसतरंगिणीः - 15/28-29, 103
2. ऋग्वेदः - 5/2/3-4

जिस मनुष्य के मसूड़े, दांत आदि ठीक नहीं होते, वें सब अक्षरों का उच्चारण नहीं कर सकते। जो एक भी वर्ण का ठीक उच्चारण नहीं कर सकता वह मन्त्रों के उच्चारण का अधिकारी नहीं। इसी दृष्टि को सन्मुख रखकर वेद चतुर्थ चरण में कहता है कि (किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुक्थाः) क्या अब भी मुझे इन्द्र अनुक्थ अर्थात् मन्त्रों के उच्चारण का अनधिकारी करेंगे? नहीं।

इससे पता लगता है कि जिनके दांत खराब हैं या जो अनुक्त अर्थात् मन्त्रों के उच्चारण के अनधिकारी हैं उन्हीं के सम्बन्ध में यह वर्णन किया गया है। जिन के दांत अच्छे हैं, यदि वे भी अपने दांतों में स्वर्ण जड़वा लें तो उनके दांत भी शुद्ध, तेज और अमृत को देने वाले होंगे। इसी से यह भी पता लगता है कि स्वर्ण वाणी के लिये भी हितकर है।

दूसरे मन्त्र में वेद कहता है कि (क्षेत्राद् अपश्यम्) मैंने क्षेत्र से देखा, (क्या?) (सनुतश्चरन्तम्) सब समान कटे हुए, छोटे बड़े नहीं अथवा सब समान होकर चर रहे थे, (पुरु शोभमानम्) हस प्रकार वे बहुत शोभा को प्राप्त हो रहे थे (सुमद्यूथं न) जिस प्रकार खूब चतुर अच्छी बुद्धि से सम्पन्न व्यूह के समान होकर काम करता हुआ शोभित होता है, उसी प्रकार दांतों का व्यूह, जो कि शरीर रक्षा के लिये मुख में बनाया गया है, शोभा को प्राप्त हो रहा था।

इस प्रकार दांतों की व्यूह से उपमा देकर यह बताया गया है कि दांतों का व्यूह (समूह) शरीर का बहुत बड़ा रक्षक है। इस व्यूह के बिगड़ने से शरीर पर अनेक प्रकार की आपत्तियां आ सकती हैं। इस लिये व्यूह को कभी बिगड़ने नहीं देना चाहिये।

इससे आगे वेद वताता है कि (ता पलिक्नीः अगृभ्रन्) उन बूढ़ी स्त्रियों ने अमृत को लिया (जो प्रथम मन्त्र में दांतों ने दिया है), (युवतयः भवन्ति) उस अमृत को लेकर वे बूढ़ी स्त्रियां जवान हो गई। एक वार मर कर पुनः जन्म ग्रहण कर जवान नहीं हुई, वेद कहता है कि (सः न अजनिष्ट) उसने पैदा नहीं किया अर्थात् वे ही बूढ़ी स्त्रियां उन्होंने दांतों में सुवर्ण लगाकर उनको दृढ़ तथा स्वच्छ किया उन दांतों से दिये हुए अमृत को पिया है, फिर जवान हो गई।

निष्कर्ष

इस प्रकार हमने देखा कि वेद ने दांतों के विषय में कितनी उत्तम चिकित्सा बताई है। परन्तु वेदों का अध्ययन न करने वाले और वेदों को गड़रियों का गीत बताने वाले पाश्चात्यों से पूछो कि क्या वेद गड़रियों के गीत ही हैं जो कि ऐसे ऐसे उत्तम ज्ञानों के भण्डार हैं। आज कल के पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित चिकित्सकों ने दांतों के रोगों से पीड़ितों के दांत उखाड़ कर, उन्हें कृत्रिम दांतों के आधीन कर दिया है। वेद की चिकित्सा पाश्चात्य चिकित्सकों की बुद्धि से परे है।

इति शम्

संदर्भ ग्रंथ सूची

शास्त्री, राजेश्वरदश्र, *चरकसंहिता,* चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1962

शास्त्री, अम्विकादश्र, *सुश्रुतसंहिता,* चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी, 1954

कुमार, धर्मेन्द्र, *यजुर्वेदसंहिता,* दिल्ली संस्कृत अकादेमी, दिल्ली, 2013

मालवीय, सुधाकर, *गोभिलगृह्यसूत्रम्*, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2016

मिश्र, श्रीमित्र, *वीरमित्रोदयः संस्कारप्रकाशः*, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी, 1916

मिश्र, जगदीशचन्द्र, *पारस्करगृह्यसूत्रम्*, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2019

पाण्डेय, रामनारायण शास्त्री, *महाभारत (प्रथम खण्ड)*, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं0 2072

पाण्डेय, राजबली, *हिन्दु संस्कार*, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1957

पाण्डेय, उमेशचन्द्र, *याज्ञवल्क्यस्मृतिः*, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, वि0 सं0 2050

❑❑

मांगी लाल
शोधार्थी (राजनीति विज्ञान विभाग)
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर, राजस्थान

ATISHAY KALIT
Vol. 9, Pt. A
Sr. 15, 2022
ISSN : 2277-419X

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में पंचायतीराज की प्रासंगिकता
(राजस्थान राज्य के विशेष संदर्भ में)

सारांश—स्वतंत्रता के पश्चात भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को अपनाया गया। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में पंचायती राज व्यवस्था वह माध्यम है, जो शासन को आम जनता के द्वार तक लाता है। लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की अवधारणा में पंचायती राज व्यवस्था एक मील का पत्थर साबित हुई। पंचायती राज व्यवस्था को जनता की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करने, समाज को सशक्त बनाने और ग्रामीण भारत के निम्नतम स्तर पर विकास प्रक्रिया शुरू करने के लिए इसे स्थानीय स्व-सरकार माना जाता है। पंचायतीराज संस्थाएं लोकतंत्र की प्राथमिक पाठशाला है। ग्रामीण भारत में लोकतंत्र का विस्तार करने के लिए ही भारत में पंचायती राज व्यवस्था स्थापित की गई। इस संदर्भ में महात्मा गांधीजी ने ठीक कहा था कि 'लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का संचालन केन्द्र में बैठे 20 व्यक्तियों द्वारा नहीं वरन् प्रत्येक गांव में निवास कर रहे ग्रामीणजन द्वारा होना चाहिए।' पंचायती राज व्यवस्था भारतीय लोकतंत्र की बहुत बड़ी उपलब्धि है और वर्तमान बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में पंचायती राज व्यवस्था की प्रासंगिकता और भी बढ गई हैं। राजस्थान के ग्रामीण विकास में, लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण में, राजनीतिक सहभागिता को बढाने में, प्रशासनिक जनचेतना के विकास में, कोविड-19 महामारी का मुकाबला करने में तथा किसी भी योजना के क्रियान्वयन में पंचायती राज व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। समय एवं परिस्थियों के अनुसार पंचायती राज व्यवस्था के महत्व को देखते हुए इस पर निरतंर अध्ययन करना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान राज्य के विशेष संदर्भ में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में पंचायती राज व्यवस्था की प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया हैं।

मूल शब्द—लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण, पंचायतीराज, स्व-सरकार, ग्राम स्वराज, राजनीतिक सहभागिता, ग्रामीण विकास एवं कोविड-19 महामारी।

प्रस्तावना

भारत की ग्रामीण प्रशासनिक व्यवस्था प्राचीनकाल से ही सुदृढ रही है। जिसके साक्ष्य हमें प्राचीन सिक्कों, अभिलेखों और साहित्यों से प्राप्त होते हैं। विदेशी यात्रियों एवं विद्वानों के वर्णन भी इस बात के प्रमाण है कि भारत में पंचायती राज व्यवस्था सदियों से चली आ रही हैं। प्राचीनकाल से ही यहां के गांव सशक्त रहे हैं। गांवों को स्वायत्तता प्रारम्भ से मिली हैं। यहां के ग्रामीण विकास का प्रमुख आधार स्तम्भ पंचायती राज व्यवस्था हैं।[1] पंचायती राज व्यवस्था लोकतांत्रिक पद्धति का मूल आधार

है। इसलिए स्वतंत्रता के पश्चात इस संदर्भ में व्यापक स्तर पर प्रयास किए गए जिसमें सामुदायिक विकास कार्यक्रम 1952 से लेकर 73 वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 तक इस क्षेत्र में प्रयास जारी रहे और अंततः पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिकता का दर्जा प्राप्त हुआ। आज स्वतंत्रता, समानता, न्याय एवं बन्धुत्व की विचारधारा को समेटे हुए पंचायती राज व्यवस्था भारतीय संविधान के भाग-9 (अनुच्छेद 243 से 243ण तक) में एक संवैधानिक निकाय के रूप में क्रियान्वित है।

राजस्थान में पंचायतीराज व्यवस्था की स्थापना

भारत में सबसे पहले पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना का श्रेय राजस्थान को प्राप्त है। 02 अक्टूम्बर 1959 को महात्मा गांधीजी की जयंती के अवसर पर भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने गांधीजी के ग्रामीण स्वराज के सपने को पुरा करने के उद्देश्य से नागौर में दीप प्रज्वलित कर पंचायती राज व्यवस्था की नींव रखी। स्थानीय स्वशासन लोकतंत्र की किसी भी व्याख्या का सच्चा आधार हैं।[2] हमारा कुछ ऐसा स्वभाव पड़ गया है कि हम उच्च स्तर पर ही लोकतंत्र की बात सोचते है, निम्न स्तर पर नहीं। उन्होनें ग्रामीण जनता का आह्वान किया कि वें लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की इस प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनते हुए विकास की प्रक्रिया को स्वंय आगे बढाए।

भारतीय लोकतांत्रिक संरचना में शासन के सबसे निचले व तीसरे पायदान पर विद्यमान पंचायती राज व्यवस्था हमारे लोकतंत्र की आधारशिला है। भारत में पंचायती राज व्यवस्था की मान्यता सदियों से चली आ रही है। पंचों में परमेश्वर निवास करता हैं। ऐसी हमारी मान्यता रही है, वेदों में भी कहा गया हैं कि पांच व्यक्ति समर्पित रूप से मिलकर यज्ञ पूर्ण कर सकते हैं। वेद एवं उपनिषद में भी ग्रामीण शासन व्यवस्था का उल्लेख किया गया हैं। लोक जीवन में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और यहां तक कि पारिवारिक स्तर पर भी पंच और पंचायत के फैसलों को बड़े आदर के साथ स्वीकारा जाता रहा हैं। महात्मा गांधीजी ने पंचायतों के महत्व को बताते हुए कहा कि- ग्राम स्वराज की मेरी कल्पना यह है कि यह एक ऐसा सम्पूर्ण लोकतंत्र होगा, जो अपनी अहम् आवश्यकताओं के लिए अपने पड़ोसियों पर भी निर्भर नहीं रहेगा और फिर भी बहुत सी दुसरी आवश्यकताओं के लिए, जिनमें दुसरों का सहयोग अनिवार्य होगा, वह परस्पर सहयोग से काम लेगा। इस तरह प्रथम कार्य हर गांव का यह होगा कि वह अपनी आवश्कता का तमाम अनाज और कपड़ों के लिए पूरा कपास खुद ही पैदा कर लें। उनके पास इतनी अतिरिक्त जमीन होनी चाहिए, जिसमें पशु चर सकें और गांव के बड़ों और बच्चों के मन बहलाव के साधन, खेल-कूद के मैदान की व्यवस्था हो सकें क्योंकि जब मुझे गांव वालों को गरीबी के अभिशाप से मुक्त कराने में सफलता मिलेगी तभी मैं समझूगां कि हम स्वतंत्र हो गए। इस प्रकार स्वतंत्रता भारत के सबसे निचले पायदान से शुरू होनी चाहिए हरेक गांव में पंचायत का राज होगा। उसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी। इसका मतलब यह है कि हरेक गांव को अपने पांव पर खड़ा होना होगा।[3]

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में पंचायतीराज की प्रासंगिकता

भारत में पंचायतीराज की अवधारणा लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की अवधारणा पर आधारित है। जिसका अर्थ है स्थानीय स्तर की आवश्यकताओं को जानकार स्वंय जनता द्वारा ही अपने स्वहित

के लिए योजना बनाना, पहल करना, स्वतंत्रतापूर्वक उसको क्रियान्वित करना तथा जनप्रतिनिधियों के माध्यम से राजनीति वह प्रशासन में अपनी सहभागिता देना हैं। शासन प्रणाली का सर्वश्रेष्ठ रूप अर्थात लोकतंत्र की ग्रासरूठ स्तर पर स्थापना पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से ही संभव हुई। लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की मूर्त रूप पंचायती राज व्यवस्था ने निर्धन, निरक्षर, असंगठित तथा उपेक्षित ग्रामीण लोगों को आवाज एवं जुबान दोनों दी हैं।[4] वर्तमान परिदृश्य में कोविड-19 वैश्विक महामारी में पंचायती राज व्यवस्था की प्रासंगिकता का अध्ययन करना अंत्यत आवश्यक हो गया। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में पंचायती राज की वर्तमान प्रासंगिकता को निम्नलिखित बिन्दुओं के अंतर्गत स्पष्ट किया जा सकता हैं।

1. ग्रामीण विकास में—भारत की तीन-चौथाई आबादी गांवों में निवास करती हैं। हमारा भारतवर्ष गांवों में बसता हैं, गांव हमारी संस्कृति के केन्द्र बिन्दु है। जब तक भारत के गांव उन्नत, स्वालम्बी और समृद्ध नहीं होगें तब तक स्वतंत्रता एवं स्वराज का भारत के लिए कोई मूल्य नहीं हैं।[5] ग्रामीण विकास एक व्यापक अवधारणा हैं। जिसके अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्र में कृषि, पशुपालन, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, सामाजिक व आर्थिक ढांचे में विकास को प्राथमिकता देना हैं और राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्र के विकास में पंचायती राज व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान हैं।

2. लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के रूप में—पंचायती राज व्यवस्था भारत में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की अवधारणा पर आधारित हैं। जिसमें शासन सत्ता को एक स्थान पर केन्द्रीत करने के बजाय उसे स्थानीय स्तरों पर विभाजित किया जाता हैं, ताकि आम आदमी की सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित हो सकें और वह अपने हितों व आवश्यकताओं के अनुरूप शासन प्रक्रिया में योगदान दे सकें। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में पंचायती राज व्यवस्था वह माध्यम है, जो शासन को आम जनता के द्वार तक लाता है।[6] इस प्रकार लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की अवधारणा में पंचायती राज व्यवस्था एक मील का पत्थर साबित हुई।

3. लोकतंत्र की प्रथम पाठशाला के रूप में—पंचायती राज व्यवस्था को लोकतंत्र की प्रथम पाठशाला माना जाता हैं क्योंकि यह वह स्तर है जहां पर कोई आम व्यक्ति पहली बार शासन प्रक्रिया भाग लेता हैं। इस प्रकार स्थानीय स्वशासन लोकतंत्र की किसी भी व्याख्या का सच्चा आधार हैं और होना भी चाहिए। हमारा स्वभाव कुछ ऐसा पड़ गया है कि हम उच्च स्तर पर लोकतंत्र के बारे में सोचते हैं और निम्न स्तर पर नहीं। यदि नीचे से नींव का निर्माण न किया जावें तो संभव हैं कि लोकतंत्र सफल नही हो सकेगा।[7]

4. राजनीतिक सहभागिता के रूप में—लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को एकमात्र ऐसी शासन व्यवस्था माना जाता हैं जो लोगों की इच्छा पर आधारित होती हैं। जो सत्ता के संघर्ष में यथासंभव अधिक से अधिक लोगों की सहभागिता की कामना करती हैं। सहभागिता वह प्रमुख माध्यम है, जिसके द्वारा लोकतंत्र में सहमति को मान्य अथवा अमान्य किया जाता हैं तथा शासकों जनता के प्रति उत्तरदायी बनाया जाता हैं। राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था से ग्रामीण जनता की राजनीति में सहभागिता दिनों-दिन बढी हैं।

5. प्रशासनिक जनचेतना के विकास में—पंचायती राज व्यवस्था के कारण जन सामान्य में

प्रशासनिक जनचेतना एवं राजनीतिक जागरूकता का विकास हुआ हैं। जिससे ग्रामीण विकास में जन सामान्य की सहभागिता एवं सहयोग की भूमिका बढी हैं।[8] आज राजस्थान के अधिकांश जिलों में ग्राम पंचायतें स्वयं अपने क्षेत्र के विकास सम्बन्धी योजनाएं तैयार करती हैं और उनका क्रियान्वयन भी स्वयं के स्तर पर करती हैं। यह प्रशासनिक जन चेतना एवं जन सशक्तिकरण का परिणाम हैं।

6. विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में—पंचायती राज व्यवस्था की मूल भावना ग्राम पंचायतों द्वारा स्वशासन कायम किए जाने की है। दरअसल सत्ता का विकेन्द्रीकरण संसद, विधानसभा से होते हुए ग्रामसभा तक हो यहीं महात्मा गांधीजी का सपना था।[9] स्थानीय स्वशासन में संसाधनों की कमी, सुविधाओं का अभाव और सीमित क्षमता बड़ी बाधाएं रही। जिन्हें पंचायत स्तर पर विभिन्न योजनाएं बनाकर दूर किया जा सकता हैं। राज्य के समग्र विकास के लिए गांवों को समृद्ध, खुशाहल तथा प्रगति की राह में आगे बढे। इसके लिए ग्राम पंचायत स्तर पर विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन किए जाने की आवश्यकता हैं और विकास की विभिन्न योजनाओं का लाभ अंतिम आदमी तक पहुंचाने का दायित्व पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से ही संभव हो सकता हैं।

7. कोविड-19 महामारी का मुकाबला करने में—वैश्विक महामारी कोविड-19 ने संम्पूर्ण विश्व के समक्ष नई चुनौतियां और समस्याएं उत्पन्न की हैं। कोरोना महामारी ने न केवल हमारी स्वास्थ्य प्रणाली के सामने संकट खड़ा किया है, बल्कि आर्थिक-सामाजिक स्तर पर भी दुनिया में बड़े बदलाव आए हैं। कोविड-19 महामारी का मुकाबला करने के लिए राजस्थान की सभी ग्राम पंचायतों, उनके निर्वाचित जनप्रतिनिधियों, पंचायतकर्मियों, गांव से जुड़े अन्य कर्मचारियों, आशा सहयोगिनियों ने अभूतपूर्व योगदान दिया हैं। पंचायती राज संस्थाओं ने कोविड-19 के रोकथाम के लिए जरूरी उपायों के बारे में सम्बन्धित प्रस्तुतियां देने के साथ-साथ माईक/स्पीकर के जरिए सार्वजनिक घोषणा कर रही है। लगभग सभी जिलों में ग्राम पंचायतों ने पंचायत भवन या सरकारी स्कूल या ग्राम पंचायत क्षेत्र की सड़कों का उपयोग दीवारों पर स्लोगन लिखकर या चित्र बनाकर जन जागरूकता के लिए प्रयास किए हैं। जागरूकता बढाने के अलावा अधिकांश जिलों की ग्राम पंचायतें कोविड-19 महामारी को ध्यान में रखते हुए ग्रामीणों के स्वास्थ्य और साफ-सफाई के प्रति भी सजग रही हैं।

देश में कोविड-19 के प्रकोप की गंभीरता को देखते हुए इसकी रोकथाम के लिए पंचायती राज मंत्रालय ने पंचायती राज संस्थाओं और राज्यों के साथ मिलकर लॉकडाउन प्रारम्भ करने के साथ ही प्रभावी कारगर उपाय किए हैं। प्रत्येक ग्राम पंचायत ने अपनी क्षमता और स्थिति के अनुसार व्यापक एहतियाती उपाय लागू किए ताकि संक्रमण का प्रसार रोका जा सकें और कोरोना वायरस से होने वाली मृत्युदर कम की जा सकें। पंचायती राज संस्थाएं केन्द्र और राज्य सरकार, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा-निर्देशों के अनुसार सक्रियता से कोविड महामारी की रोकथाम में लगी हैं।

निष्कर्ष

प्राचीनकाल से पंचायती राज व्यवस्था भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन का अभिन्न अंग रही हैं। इसकी प्रासंगिकता एवं महत्व को संविधान के 73 वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 में नया आयाम दिया गया और पंचायतों को व्यापक अधिकार देने का दायित्व राज्यों को सौंपा

गया हैं। 73 वें संविधान संशोधन अधिनियम के बाद भारत में बड़ी संख्या में गैर सरकारी तथा सामुदायिक संगठन पंचायतों की सफलता के लिए अनुकूल स्थितियां पैदा करने में उत्प्रेरक की भूमिका निभा रहे हैं। पंचायती राज संस्थाएं अपनी अधिनस्थ भौगोलिक क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए योजनाओं की पहचान और उसकी प्राथमिकता निर्धारित करने के सिद्धांतों के निरूपण कर सामाजिक एवं आर्थिक विकास के योजना निर्माण की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई हैं। राजस्थान की बहुसंख्यक आबादी आज भी गांवों में निवास करती हैं। इसलिए गांवों के समग्र विकास में ही राजस्थान की प्रगति और समृद्धि की कुंजी छिपी हैं। पंचायती राज व्यवस्था की मूल भावना ग्राम पंचायतों द्वारा स्वशासन स्थापना करना हैं। राजस्थान में गांधीजी के ग्राम स्वराज के सपनों को साकार करने तथा राज्य के समग्र विकास के लिए गांवों को समृद्धि, खुशाहल तथा प्रगति की राह में आगे बढाने के लिए ग्राम पंचायत द्वारा स्वशासन की स्थापना किए जाने की आवश्यकता हैं। जिसे विकास का लाभ अंतिम छोर पर बैठे आदमी तक पहुंचाने का दायित्व पंचायती राज व्यवस्था पर हैं। पंचायती राज व्यवस्था वर्तमान वैश्विक महामारी कोविड-19 से संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। आपदा को अवसर में परिवर्तित कर देने की पंचायती राज व्यवस्था की विलक्षण क्षमता का साक्षात उदाहरण कोविड-19 के इस काल को कहा जा सकता हैं। कोविड-19 के संक्रमण काल के दौरान बाहर से आने वाले प्रवासी श्रमिकों के लिए का गांव के बाहर क्वारेंटाईन सेन्टरों के निर्माण एवं उनके संचालन में देशभर की पंचायतों ने मिशाल पेश की हैं। हमारा देश पंचायती राज संस्थाओं के सशक्तिकरण और सत्ता के विकेन्द्रीकरण में ही अपना उज्ज्वल भविष्य देख रहा हैं। इसके लिए सरकार ग्राम पंचायतों को हर संभव मजबूत प्रदान करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही हैं।

संदर्भ-सुची

1. मैथ्यू, जॉर्ज : भारत में पंचायती राज- परिप्रेक्ष्य एवं अनुभव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015 पृष्ठ संख्या 87
2. गुप्ता, भावना : पंचायती राज और कानून, इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2010, पृष्ठ संख्या 122
3. फड़िया, बी.एल : भारत में पंचायती राज का भविष्य, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 2010, पृष्ठ संख्या 54
4. कटारिया, सुरेन्द्र : पंचायती राज संस्थाएं : अतीत, वर्तमान और भविष्य, नेशनल पब्लिकेशिगं हाउस, जयपुर, 2010, पृष्ठ संख्या 71
5. तिवाड़ी, चौधरी : राजस्थान में पंचायत कानून, ऋचा प्रकाशन, जयपुर, 1995, पृष्ठ संख्या 46
6. आर्य, विमला : पंचायतीराज में महिलाओं की भूमिका, राजस्थानी ग्रंथागार, सोजती गेट, जोधपुर, 2013, पृष्ठ संख्या 282
7. महला, एच. एस. : राजस्थान में पंचायतीराज की वर्तमान स्थिति, समस्याएं एवं सुझाव, राजस्थान विकास, मार्च-अप्रैल 1999, पृष्ठ संख्या 9
8. कुमावत, ललित : पंचायतीराज एवं वंचित महिला समुह का उभरता नेतृत्व, क्लासिकल पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ संख्या 131

9. मीणा, हरिमोहन : पंचायतीराज संस्थानों और उनके विकास : राजस्थान के संदर्भ में शोध पत्रिका, सितम्बर 2018, पृष्ठ संख्या 13
10. राजस्थान पंचायतीराज वार्षिक प्रतिवेदन 2010 से 2021 तक।
11. पंचायत वाणी, दिव्य पंचायत, राजस्थान पत्रिका, दैनिक नवज्योति एवं दैनिक भास्कर जयपुर।
12. www.panchaytraj.gov.in
13. www.rajpanchayt.rajasthan.gov.in

❑❑

पूनम देवी (शोध छात्रा)
डॉ. अंजू चौधरी (प्रोफेसर)
प्राचार्या
महिला महाविद्यालय, किदवई नगर, कानपुर

ATISHAY KALIT
Vol. 9, Pt. A
Sr. 15, 2022
ISSN : 2277-419X

हास्य व्यंग्य कलाकार..... आर.के. लक्ष्मण

सारांश

हास्य-व्यंग्य चित्रकार एक ऐसा स्वतन्त्र जीव है। जो अपनी कलम के माध्यम से कुछ आडी-तिरछी रेखाओ एवं कम से कम शब्दों के माध्यम से अपने अन्तर्मन की बात लोगों के मन मस्तिष्क तक बड़ी ही सहजता से पहुँचा देता है। समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में शब्दों, विचारों प्रत्यारोपों तथा सुखद व दुखद समाचारों की भीड़ में हास्य व्यंग्य कलाकार चित्रकार कबीर की परम्परा का निर्वहन करते हैं। ये कलाकार समाज की मौजूदा स्थितियों और विसंगतियों पर तलवार से भी तेज धारदार कटाक्ष करके समस्त मानव को जागरूक बनाने का अथक प्रयास करते हैं। वही दूसरे पहलू पर दृष्टि डाले तो कुछ लोगों की नजरों में हास्य व्यंग्य चित्रकार एक विदूषक की तरह है। देश की संस्कृति, समाज एवं राजनीति को दर्शाने एवं समझाने का जो कार्य समाचार पत्र के अटठारह अथवा बीस पृष्ठ नहीं कर पाते उसी कार्य को एक हास्य व्यंग्य चित्रकार (कार्टूनिस्ट) समाचार पत्र के एक छोटे से हास्य व्यंग्य कोने के माध्यम से सरलतापूर्वक समझाने में सफल होता है।

मूल शब्द : आडी-तिरछी रेखाओं, स्वतन्त्र, अन्तर्मन, सहजता, प्रत्यारोपों, परम्परा, निर्वहन, जागरूक, अथक प्रयास, पहलू, विदूषक।

प्रस्तावना

श्री आर.के. लक्ष्मण को भारत के प्रसिद्ध एवं विश्वविख्यात व्यंग्य चित्रकार के रूप में ख्याति प्राप्त है। आर.के. लक्ष्मण की प्रसिद्धि ''द कॉमन मैन'' व्यंग्य चित्रण (कार्टून) के रूप में हुई अपने व्यंग्य चित्रों के माध्यम से आर.के. लक्ष्मण ने आम आदमी को एक विशेष महत्वपूर्ण एवं सर्वथा अग्रणीय स्थान दिलाने का प्रयास निरन्तर अपने हास्य व्यंग्य चित्रों के माध्यम से किया और आम आदमी को समस्त उलझने, मायूसी, अन्धेरे-प्रकाश, सुख-दुख एवं सभी प्रकार की समस्याओं को अपनी तुलिका द्वारा खींची रेखाओं और अपने शब्दों की सहायता से समाज एवं दुनिया के सम्मुख

प्रस्तुत किया। असाधारण व्यक्तित्व के धनी आर.के. लक्ष्मण ने समय की नब्ज को पहचानकर देश और समाज की बिगड़ती हालत, भ्रष्टाचार राजनीति, कूटनीति जैसी परिस्थितियों को अपने व्यंग्य चित्रों का प्रमुख विषय चुना। लक्ष्मण के व्यंग्य चित्रों की दुनिया अत्यन्त सटीक एवं पारदर्शी है जिनके द्वारा समाज का स्पष्ट चेहरा तो दिखाई देता ही है, साथ ही भारतीय राजनीति मे होने वाली उथल-पुथल बदलाव एवं कूटनीति भी साफ-साफ दिखाई पड़ती है।

आर.के. लक्ष्मण का जन्म 24 अक्टूबर 1921 को कर्नाटक के मैसूर के पास सलेम जिले के रासीपुरम गाँव में हुआ। इनके पिता कृष्णा स्वामी हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत थे। आर.के. लक्ष्मण छः भाई बहन थे जिनमें लक्ष्मण अपने सभी भाई बहन में सबसे छोटे थे। आर.के. लक्ष्मण का पूरा नाम रासीपुरम कृष्णास्वामी लक्ष्मण है जो इनके पिता के नाम और गांव के नाम पर पड़ा। लक्ष्मण के पिता कृष्णास्वामी स्वभाव से गुस्सैल और बहुत कठोर थे जिस कारण इनका नाम टाइगर पड़ गया था। लक्ष्मण के पिता को किताबे पढ़ने का बहुत शौक था। लक्ष्मण की माता एक घरेलू महिला थी और स्वभाव की बहुत खुशमिजाज महिला भी थी। इनकी माता टेनिस एवं शतरंज की एक अच्छी खिलाड़ी थी। इसलिये मैसूर की महारानी लक्ष्मण की माता को कभी-कभी महल में अपने साथ खेलने के लिए बुलाया करती थी। लक्ष्मण की माता हस्तशिल्पी में काफी कुशल थी और उन्हें किताबें पढ़ने का भी शौक था जबकि वे कभी स्कूल या कॉलेज नहीं गई थी और उन्हें संस्कृत अथवा तमिल साहित्य की कोई जानकारी नहीं थी परन्तु अंग्रेजी में अनुवादा में उन्होंने ये सब पढ़ा।

बचपन में लक्ष्मण बहुत ही शरारती व उधम करने वाले बच्चों में से एक थे और पढ़ने लिखने में इनका मन बिल्कुल भी नहीं लगता था और स्कूल जाने से भी बहाने करते थे। लक्ष्मण के रिश्ते में एक दूर के चाचा ने इनका स्कूल जाना प्रारम्भ कराया। लक्ष्मण की प्रारम्भिक शिक्षा इनके गाँव के स्कूल में हुई अपने स्कूल के बारे में लक्ष्मण का कहना है कि मुझे स्कूल में बेकार लगता था वैसे ही जैसे अधिकांश बच्चे सोचते हैं मुझे बताइये कौन ऐसा बच्चा होगा जो स्कूल जाना पसन्द करता है। स्कूल में सभी बच्चे जमीन पर बैठते थे और जोर-जोर से पढ़कर पाठ याद करते थे शिक्षक बड़े ही डरावने थे। वे श्यामपट्ट पर कुछ कार्य लिख देते थे और हम सभी बच्चों से उसे कापी में उतारने को कहकर बाहर गप्पे लगाने अथवा बीड़ी पीने चले जाते थे। लक्ष्मण बहुत ही शरारती थे और उनकी शरारतों के कारण उन्हें सजा भी मिलती थी। कई बार स्कूल में लक्षमण की पिटाई भी हुई। अपने विद्यार्थी जीवन के बारे में लक्ष्मण बताते है कि, ''मेरे परिवार वालों का मुझ पर जोर था कि मैं स्कूल जाँऊ परन्तु जब मैं परीक्षाओं में फेल हो जाता था। तो वे मुझे डाँटते नहीं थे प्रत्येक वर्ष में सालाना परीक्षाओं में मुश्किल से ही पास होता था जब मैंने कॉलेज में प्रवेश लिया था वहां भी यही हाल रहा। बस केवल स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की और उसके पश्चात् आप मेरी उस राहत का अनुमान लगा सकते थे कि चलो अब कभी कक्षा में नहीं जाना पडेगा।''

पाँच वर्ष की आयु से लक्ष्मण ने स्कूल प्रारम्भ किया। लक्ष्मण की आरम्भिक शिक्षा उनके गांव में ही हुई। और उनकी प्राइमरी म्युनिसिपल से पूर्ण हुई। बचपन मे लक्ष्मण चॉक के टुकडों से जमीन व दीवारों पर चित्र बनाते रहते थे। लक्ष्मण ने चित्र बनाना लगभग तीन वर्ष की आयु से आरम्भ कर दिया था। चित्र बनाने पर लक्ष्मण को कभी-कभी उनके पिता से डाँट भी पड़ती थी। लक्ष्मण जो भी

अपने प्रत्यक्ष देखते उसका ही चित्र चॉक के टुकडों से जमीन और दीवारों पर उकेर देते थे। बचपन में बिच्छुओं और टिटड्डियों, तितलियों को पकड़ने, कुत्तों को पत्थर मारने वाले लक्ष्मण जब बड़े होने लगे तो अपने जीवन में यह पाठ बहुत जल्द ही सीख लिया कि ''स्वार्थ बहुत बुरा है।''

लक्ष्मण ने हाईस्कूल उत्तीर्ण करने के पश्चात् ही यह निर्णय कर लिया था कि वह एक राजनैतिक व्यंग्य चित्रकार के रूप में अपना भविष्य बनाएँगे। लक्ष्मण के बड़े भाई रासीपुरम कृष्णास्वामी नारायण जिन्हें आर.के. नारायण के नाम से जाना जाता है। एक प्रसिद्ध कथाकार एवं उपन्यासकार थे जिनकी रचनाएँ, ''गाइड'' तथा ''मालगडी डेज'' आदि ने प्रसिद्धि की ऊँचाइयों को छुआ था।

आर.के. नारायण लक्ष्मण से लगभग 15 वर्ष बड़े थे। आर.के. नारायण अपने भाई लक्ष्मण को अग्रेजी की किताबें जोर से पढ़कर सुनाते थे और मुश्किल अंग्रेजी हिस्सों का अनुवाद हिन्दी में करके लक्ष्मण को समझाते थे। उनके घर में सदैव पढ़ने-लिखने का वातावरण रहा। आर.के. लक्ष्मण को उनके बडे भाई आर.के. नारायण का पूर्ण सहयोग प्राप्त था और आर.के. नारायण की रचनाओं गाइड तथा ''मालगुडी डेज'' ने प्रसिद्धि और ऊँचाइयों को छुआ। इन रचनाओं के लिए लक्ष्मण ने अनेक रेखाचित्र बनाये जो हिन्दू समाचार पत्र में छपे (प्रकाशित) हुए। उस समय लक्ष्मण केवल नौ वर्ष के थे। लक्ष्मण को यह रेखाचित्र बनाने का सुनहरा अवसर उनके भाई आर.के. नारायण के कारण मिला जिसका उन्होंने पूरा लाभ उठाया। आर.के. नारायण की रचनाएँ 'द हिन्दू' अखबार में छपने लगी। 'द हिन्दू' अखबार में आर.के. नारायण की कहानियों के साथ लक्ष्मण के रेखाचित्र भी प्रसिद्ध हुए। उसी समय रेखाचित्रों का निरन्तर अभ्यास करते हुए लक्ष्मण ने तुलिका एवं स्याही का सही इस्तेमाल करना सीखा।

लक्ष्मण बचपन से ही इग्लैंड के प्रसिद्ध व्यंग्य चित्रकार सर डेविड लो से अत्यधिक प्रभावित थे। सर डेविड लो जो दुनिया के सबसे बेहतरीन एवं विश्वविख्यात व्यंग्य चित्रकार थे। इसके साथ-साथ ही ये लंदन के इवनिंग स्टैडंड पॉलिटिकल व्यंग्यकार भी थे। लक्ष्मण सर डेविड लो से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने महिनों तक पैसे एकत्रित कर डेविड लो के व्यंग्य चित्रों वाली किताब खरीदी। लक्ष्मण की कभी-कभी यह कहकर आलोचना भी की गई कि वे सर डेविड लो की नकल करते हैं। इस पर लक्ष्मण का कहना है कि शायद ऐसा हो सकता है ''क्योकि सर डेविड लो ने मुझे बहुत प्रभावित किया।''

मैट्रिक की पढ़ाई लक्ष्मण ने महाराज हाईस्कूल मैसूर से सम्पन्न की। बचपन में लक्ष्मण किकेट के बेहद शौकीन थे उन्होंने अपने दोस्तों के साथ मिलकर एक क्रिकेट टीम बनायी थी जिसका नाम लक्ष्मण और उनके साथियों ने ''रफ एण्ड टफ जोली टीम'' रखा जिस पर इनके बड़े भाई आर.के. नारायण ने एक कहानी भी लिखी, जिसका शीर्ष आर.के. नारायण ने ''द राघा क्रिकेट क्लब'' रखा था। एक बार आर.के. नारायण ने लक्ष्मण के बचपन की शरारतों पर एक कहानी लिखी जिसका शीर्षक था 'डोबू द मनी वेक'। इस कहानी पर आर.के. नारायण को मद्रास में पुरस्कार भी मिला। चैन्नई को उस समय मद्रास के नाम से जाना जाता था।

आर.के. लक्ष्मण जब हाईस्कूल में पढ़ते थे। उसी दौरान उनके पिता की मृत्यु हो गई जिसके कारण इनकी आर्थिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पडा। लक्ष्मण ने बड़ी कठिनाइयों से इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण

की। लक्ष्मण के एक सबसे करीबी दोस्त थे जिनका नाम एच. कृष्णास्वामी था जिन्हें लक्ष्मण एच.के. नाम से पुकारते थे। एच.के. ने लक्ष्मण को व्यंग्य चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जबकि लक्ष्मण का मन पढ़ाई की ओर बिल्कुल नहीं था किन्तु अपनी माताजी के कहने पर उन्होंने स्नातक उत्तीर्ण की लक्ष्मण ने स्नातक करने के पश्चात् व्यंग्य चित्रकार के रूप में नौकरी करने का पहला प्रयास दिल्ली में ''हिन्दुस्तान टाइम्स'' में किया, परन्तु लक्ष्मण को कहा गया कि आप अभी बहुत छोटे हैं और साथ में यह भी सलाह दी गई कि वे क्षेत्रीय समाचार पत्रों में अपना भविष्य बनाने का प्रयत्न करे। लक्ष्मण को प्रसिद्धि मिलने से पूर्व ही उन्होंने द स्ट्रैड पंच, बायस्टैंडर वाइल्ड वर्ल्ड और टिट-बिटस जैसी पत्रिकाओं में कार्य किया और अपनी चित्रकारी का हुनर दिखाया। शीघ्र ही लक्ष्मण ने अपने ऊपर, फूलों पर, अपने घर की दीवारों पर और विद्यालयों में अपने अध्यापकों का विरूप चित्रण आरम्भ किया। लक्ष्मण के द्वारा चित्रित किया गया ''पीपल का पत्ता'' के रेखाचित्र की अध्यापकों ने प्रशंसा की। धीरे-धीरे लक्ष्मण में सभी को एक कलाकार नजर आने लगा था।

जिस समय लक्ष्मण नौकरी की तलाश में भटक रहे थे। उन दिनों भारतवर्ष को आजादी नहीं मिली थी और देश भर के डाकघर कर्मचारी हड़ताल पर चले गये थे इससे अखबारों को डाक से उनके लेख और व्यंग्य चित्र मिलने बन्द हो गये और लक्ष्मण ने इसका पूर्ण लाभ उठाया। उन्होंने एक व्यंग्य चित्र बनाया जिसे लक्ष्मण ने हिन्दू समाचार पत्र या टाइम्स ऑफ इण्डिया समाचार पत्र में प्रकाशित कराना चाहते थे। किन्तु वहाँ जाने की स्वराज समाचार पत्र के दफ्तर जा पहुँचे तथा अपना व्यंग्य चित्र वहाँ के संपादक को दे दिया। स्वराज दफ्तर के संपादक ने लक्ष्मण के व्यंग्यचित्र को देखकर पसन्द किया और कहा कि इसके लिए मैं आपको पचास रुपये दूँगा। इससे अधिक पगार हमारे दफ्तर में किसी को नहीं मिलता। लक्ष्मण ने पचास रुपये पगार पर अपनी प्रथम नौकरी स्वराज समाचार पत्र में आरम्भ की, किन्तु अतिशीघ्र ही लक्ष्मण ने यह नौकरी छोड़ दी।

इसी समय मद्रास के जेमिनी स्टुडियों ने किसी के जरिये लक्ष्मण को एक सन्देश भेजा। जैमिनी स्टुडियों एक कार्टून फिल्स ''नारद'' का निर्माण कर रही थी। इस फिल्म में हास्य व्यंग्य रेखाचित्र बनाने का प्रस्ताव जेमिनी स्टुडियों ने लक्ष्मण को भेजा। लक्ष्मण के लिए यह एक अत्यन्त सुनहरा अवसर था और उन्होंने ''नारद'' फिल्म के व्यंग्य चित्रों के लिए दस-दस घंटें काम किया और जब यह फिल्म बनकर तैयार हुईं तो सभी ने लक्ष्मण की बहुत प्रशंसा की। इस पर लक्ष्मण भी बहुत खुश थे किन्तु यह लक्ष्मण की पक्की नौकरी नहीं थी एवं लक्ष्मण वापस पुणे घर लौट आये। इसके पश्चात् लक्ष्मण ने प्रीपस में नौकरी के लिए आवेदन किया, किन्तु उन्हें नौकरी नहीं मिली।

नौकरी की तलाश करने के लिए लक्ष्मण मद्रास से दिल्ली पहुँचे लेकिन वहाँ भी निराशा की हाथ लगी। फिर उन्होंने हिन्दुस्तान टाइम्स के दफ्तर जाकर अपने व्यंग्य चित्र दिखाएँ सम्पादक को लक्ष्मण के व्यंग्य चित्र पसन्द आये किन्तु वहाँ पर भी नौकरी नहीं मिली तथा वहाँ के संपादक ने लक्ष्मण से कहा कि ''भईया कोई और नौकरी ढूँढ लो व्यंग्य चित्रकार ही क्यों बनना चाहते हो।'' लक्ष्मण कहते है कि सब किस्मत का खेल है। व्यंग्य चित्रों की वजह से ही इण्डियन-एक्सप्रेस ने आगे चलकर मुझे गोयनका के पुरस्कार से सम्मानित किया तथा हिन्दुस्तान टाइम्स ने भी दुर्गा रत्न से सम्मानित किया।

लक्ष्मण जब नौकरी की तलाश में इधर-उधर प्रयास कर रहे थे तभी उनके एक दोस्त ने उन्हें

मुम्बई आने को कहा तथा दोस्त के कहने पर लक्ष्मण मुम्बई चले गये। मुम्बई पहुँचकर लक्ष्मण ने द फ्री प्रेस जनरल का दफ्तर देखा और नौकरी के उद्देश्य से संपादक से मिलने अन्दर गये। सम्पादक महोदय से बात करने पर लक्ष्मण को ऐसा लगा जैसे नौकरी उन्हीं का इन्तजार कर रही थी। द फ्री प्रेस जनरल में लक्ष्मण ने पहली पूर्णकालिक नौकरी की और वहाँ लक्ष्मण का वेतन 250 रुपये था। इसके पश्चात् लक्ष्मण ने अपना कार्य करना आरम्भ कर दिया। उस समय बाल ठाकरे भी फ्री प्रेस जनरल में हास्य व्यंग्यकार (कार्टूनिस्ट) के रूप में कार्यरत थे। फ्री प्रेस जनरल में लक्ष्मण और बाल ठाकरे ने एक साथ कार्य किया, किन्तु बाद में बाल ठाकरे राजनीति में चले गए तथा कभी-कभी लक्ष्मण से मिलने भी प्रेस जनरल में आया करते थे।

लक्ष्मण बाल ठाकरे के विषय में बताते हुए कहते है कि मेरे बगल में बैठकर जो आदमी काम करता था। वह काफी रौबिला था एक दिन मैंने पूछा तुम्हारा नाम क्या है। उसने कहा 'बाल ठाकरे' वो बाल ठाकरे थे।

फ्री प्रेस जनरल में लक्ष्मण को काम करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। वह यह कि प्रेस जनरल के सम्पादक अपने तरीके से व्यंग्य चित्र बनवाना चाहते थे। किन्तु लक्ष्मण इस बात से बिल्कुल भी खुश नहीं थे और उनकी अन्तरआत्मा ने यह स्वीकार नहीं किया। लक्ष्मण तथा सम्पादक के विचारों में टकराव के कारण उन्होंने फ्री प्रेस जनरल की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और सीधे ''द टाइम्स ऑफ इण्डिया'' के दफ्तर जा पहुँचें। वहाँ वे आर्ट डायरेक्टर से मिले तथा उन्हें बताया कि मैं एक कार्टूनिस्ट की नौकरी चाहता हूँ। आर्ट डायरेक्टर ने लक्ष्मण से एक व्यंग्य चित्र बनाने को कहा तब लक्ष्मण ने एक व्यंग्य चित्र बनाकर आर्ट डायरेक्टर के समक्ष प्रस्तुत किया। लक्ष्मण द्वारा बनाया गया व्यंग्य चित्र आर्ट डायरेक्टर को अत्यधिक पसन्द आया तथा उन्होंने लक्ष्मण को पाँच सौ रुपये प्रतिमाह वेतन पर नौकरी प्रदान की। लक्ष्मण ने टाइम्स ऑफ इण्डिया में पचास-साठ वर्षों से भी अधिक समय तक व्यंग्य चित्रकार के रूप में कार्यभार संभाला। टाइम्स ऑफ इंण्डिया के सम्बन्ध में लक्ष्मण कहते है कि ''वहां काम कि जो स्वतन्त्रता मुझे मिली वह किसी भी भारतीय पत्रकार को इतने लम्बे समय तक नहीं मिली।''

टाइम्स ऑफ इण्डिया में लक्ष्मण की शुरुआत धमाकेदार थी। वे अपने व्यंग्य चित्रों के कारण लोगों के दिल और दिमाग पर छा गये थे। अपने व्यंग्य चित्रों के कारण लक्ष्मण को पूरी दुनिया में लोकप्रियता मिली। सुबह-सुबह जब लोगों के घर समाचार-पत्र पहुँचता तो सर्वप्रथम सभी उनके व्यंग्य चित्र (कार्टून) को देखते। अपनी रेखाओं के द्वारा लक्ष्मण नये व्यंग्य चित्रकारों के लिए आदर्श बन गए थे, जबकि लक्ष्मण के आदर्श लंदन के समाचार पत्र डवानिंग स्टेण्डर्ड के हास्य व्यंग्यकार (कार्टूनिस्ट) सर डेविड लो रहे। लक्ष्मण सर डेविड लो के व्यंग्य चित्रों के दिवाने थे और लो को लक्ष्मण अपने भगवान की तरह मानते थे। लक्ष्मण सर डेविड लो से मिलने के लिए अत्यन्त उत्सुक थे और एक दिन अचानक लक्ष्मण का यह स्वप्न सत्य हुआ। सर डेविड लो से प्रथम भेट के विषय में लक्ष्मण का कहना है कि ''सर डेविड लो को अपने कमरे में देखना मेरे लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था। एक दिन सुबह सर डेविड लो को अपने केबिन में देखकर मैं दंग रह गया। मैंने कहा मिस्टर लो! उन्होंने कहा मैं लक्ष्मण का इन्तजार कर रहा हूँ मैंने कहा मैं ही लक्ष्मण हूँ।''

लक्ष्मण वीकली के लिए नॉन पॉलिटिकल कार्टून बनाये थे किन्तु लक्ष्मण को राजनैतिक व्यंग्य चित्र बनाना अत्यधिक पसन्द था इसलिए लक्ष्मण ने टाइम्स ऑफ इण्डिया के सम्पादक से बात की और कहा आप मुझे राजनैतिक व्यंग्यचित्र बनाने की स्वतन्त्रता दीजिए। इस पर सम्पादक का जवाब था तुम अभी राजनैतिक व्यंग्यचित्र बनाने के लिए सक्षम नहीं हो। किन्तु लक्ष्मण ने आग्रह किया कि कृपया आप मुझे एक अवसर प्रदान कीजिए। सम्पादक ने लक्ष्मण से कहा कि तुम मुझे प्रतिदिन एक राजनैतिक व्यंग्यचित्र बनाकर दीजिए। अगले ही दिन से लक्ष्मण प्रतिदिन एक राजनैतिक व्यंग्य चित्र बनाते और सम्पादक महोदय को दे देते हालांकि उनके राजनैतिक व्यंग्यचित्र समाचार-पत्र में प्रकाशित नहीं होते थे। किन्तु लक्ष्मण महिनों तक प्रतिदिन एक राजनैतिक व्यंग्यचित्र बनाकर सम्पादक के समक्ष प्रस्तुत करते। तत्पश्चात् एक दिन सुबह-सुबह लक्ष्मण को सम्पादक महोदय का फोन आया और उन्होंने लक्ष्मण से एक राजनैतिक व्यंग्यचित्र बनाकर देने को कहा। लक्ष्मण ने तुरन्त राजनैतिक व्यंग्य चित्र बनाया और सम्पादक महोदय को दे दिया। तत्पश्चात् वह राजनैतिक व्यंग्यचित्र अगले दिन टाइम्स ऑफ इण्डिया के समाचार पत्र के पहले पन्ने पर छपा और तभी से लक्ष्मण के राजनैतिक हास्य-व्यंग्य चित्र 50 (पचास) वर्षों से भी अधिक वर्षों तक टाइम्स ऑफ इण्डिया के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित होता रहा।

लक्ष्मण टाइम्स ऑफ इण्डिया के लिए प्रतिदिन एक नया राजनैतिक और धमाकेदार व्यंग्य चित्र बनाते थे। परन्तु वे अपने कार्य को तकनीकि मानते थे। अपनी कलात्मकता के सम्बन्ध में लक्ष्मण कहते है कि हर रोज सुबह मैं भुनभुनता हूँ, इस्तीफा देने की सोचता हूँ और बड़ी मुस्किल से स्वयं को दफ्तर तक ले जाता हूँ तो मुझे अपना काम अच्छा लगने लगता है।

सितम्बर 2003 में लक्ष्मण के शरीर का बायां भाग लकवाग्रस्त हो गया। लक्ष्मण को लकवे के तीन अघात हुए थे। पुणे के एक अस्पताल में 17 जनवरी को लक्ष्मण को भर्ती कराया गया। 20 जून 2010 की शाम को लक्ष्मण को मुम्बई के बीच कैंडी अस्पताल में भर्ती किया गया। तत्पश्चात् उन्हें पुणे स्थानान्तरित किया गया।

आम आदमी को अपनी कूँची से जीवित करने वाले 93 वर्षीय लक्ष्मण के पेशाब सम्बन्धी संक्रमण के लिए दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल के सघन निगरानी कक्ष में भर्ती कराया गया। लक्ष्मण को स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं ने घेर लिया था। पहले लक्ष्मण गुर्दा सम्बन्धी समस्या और फेफड़े में संक्रमण से पीडित रहे। लक्ष्मण को 2010 में भी अघात का सामना करना पड़ा था जिससे अनके शरीर के दाएँ भाग पर बुरा प्रभाव पड़ा था, जिसके कारण 26 जनवरी 2015 को पुणे महाराष्ट्र में इस महान व्यंग्य चित्रकार का निधन हो गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय कार्टून कला, बंसल डॉ. वीना, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2014, पृ. 91
2. वही, पृ. 94
3. वही, पृ. 90
4. http://hi.m.wikipedia.org>viki\
5. यू-टयूब से लिया गया
6. भारतीय कार्टून कला, बंसल डॉ. वीना, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2014, पृ. 95
7. वही, पृ. 95

❑❑

कैलाश चन्द्र खटीक
भूगोल विभाग
डॉ. नेहा लोहामारोर (पर्यवेक्षक)
भूगोल विभाग
निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

ATISHAY KALIT
Vol. 9, Pt. A
Sr. 15, 2022
ISSN : 2277-419X

स्लेट पत्थर का भौगोलिक अध्ययन

सारांश—स्लेट मुख्य रूप से खनिज क्वार्ट्ज, इलाइट और क्लोराइट से बना है, जो स्लेट की संरचना का 95þ तक है। सबसे महत्वपूर्ण सहायक खनिज लौह ऑक्साइड (जैसे हेमेटाइट और मैग्नेटाइट), लौह सल्फाइड (जैसे पाइराइट), और कार्बोनेट खनिज हैं। फेल्डस्पार अल्बाइट या कम सामान्यत: ऑर्थोक्लेज़ के रूप में मौजूद हो सकता है।(10) कभी-कभी, जैसा कि नॉर्थ वेल्स के बैंगनी स्लेट में होता है, लोहे के नाभिक के चारों ओर लौह कमी वाले गोले बनते हैं, जिससे हल्के हरे रंग की चित्तीदार बनावट निकलती है। इन क्षेत्रों को कभी-कभी बाद में लागू तनाव क्षेत्र द्वारा ओवोइड्स में विकृत कर दिया जाता है, जो नमूने के क्लेवाज विमान पर देखे जाने पर अंडाकार के रूप में दिखाई देते हैं। हालांकि, इस बात के प्रमाण हैं कि कम धब्बे विरूपण के बाद भी बन सकते हैं और दरार की दिशा में अधिमान्य घुसपैठ से एक अण्डाकार आकार प्राप्त कर सकते हैं, इसलिए विरूपण का अनुमान लगाने के लिए कमी दीर्घवृत्त का उपयोग करने में सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

परिचय

स्लेट एक महीन दाने वाली, पत्तेदार, सजातीय मेटामॉर्फिक चट्टान है जो निम्न-श्रेणी के क्षेत्रीय कायापलट के माध्यम से मिट्टी या ज्वालामुखी राख से बनी एक मूल शेल-प्रकार की तलछटी चट्टान से प्राप्त होती है। यह बेहतरीन दानेदार पत्तेदार मेटामॉर्फिक चट्टान है। फोलिएशन मूल तलछटी परत के अनुरूप नहीं हो सकता है, बल्कि इसके बजाय कायापलट संपीड़न की दिशा के लंबवत विमानों में है।[1]

स्लेट में पत्ते को 'स्लैटी क्लेवाज' कहा जाता है। यह मजबूत संपीड़न के कारण होता है, जिसके कारण महीन दाने वाली मिट्टी के गुच्छे संपीड़न के लंबवत विमानों में फिर से आ जाते हैं। जब खदान में एक विशेष उपकरण के साथ, फोलिएशन के समानांतर हड़ताली रूप से 'कट' किया जाता है, तो कई स्लेट पत्थर की चिकनी सपाट चादरें बनाते हुए विखंडन नामक एक संपत्ति प्रदर्शित करेंगे, जो लंबे समय से छत, फर्श की टाइलों और अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाती हैं। स्लेट अक्सर भूरे रंग का होता है, खासकर जब देखा जाता है, सामूहिक रूप से, छतों को ढंकते हुए। हालांकि, स्लेट एक ही इलाके से भी कई तरह के रंगों में पाया जाता है; उदाहरण के लिए, उत्तरी वेल्स से स्लेट ग्रे के कई रंगों में पाया जा सकता है, पीला से गहरा, और बैंगनी, हरा या सियान भी हो सकता है।

स्लेट को शेल के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए, जिससे इसे बनाया जा सकता है, या विद्वान।[2]

चित्र 1. स्लेट पत्थर

स्लेट रॉक से बनी कुछ खास तरह की वस्तुओं के लिए भी 'स्लेट' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। इसका मतलब स्लेट से बनी एक छत वाली टाइल, या एक लेखन स्लेट हो सकता है। वे परंपरागत रूप से चट्टान का एक छोटा, चिकना टुकड़ा था, जिसे अक्सर लकड़ी में फंसाया जाता था, जिसे चाक के साथ नोटपैड या नोटिस बोर्ड के रूप में इस्तेमाल किया जाता था, और विशेष रूप से पब और सराय में रिकॉर्डिंग शुल्क के लिए। वाक्यांश 'क्लीन स्लेट' और 'ब्लैंक स्लेट' इस प्रयोग से आते हैं।[3]

स्लेट स्टोन पर साहित्य समीक्षा

क्रिस्टोफर जे. न्यग्रेन (2017)[4] ''स्लेट पर टिटियन का एक्से होमो : स्टोन,ऑयल, और पेंटिंग का ट्रांसबस्टैंटियेशन'' टिटियन का एक्से होमो (म्यूजियो डेल प्राडो, मैड्रिड) कई कारणों से अलग है। सबसे पहले, पेंटिंग एक उपहार थी, इसलिए यह संरक्षक की इच्छा के बजाय टिटियन की इच्छा को दर्शाती है। चित्रकार ने अपनी छवि की आध्यात्मिक सामग्री और इसके भौतिक आधार की भौतिक विशेषताओं के बीच संबंधों को रेखांकित करके ईसाई भक्ति की भावात्मक तात्कालिकता को बढ़ाया।

जी. ए. अलहरशानी (2018)[5] ''विकिरण मापन के लिए प्रासंगिक स्लेट के थर्मोल्यूमिनेसेंस गुण'' परमाणु दुर्घटनाओं या आतंकवादी घटनाओं से संबंधित विकिरण माप नमूना तैयार करने के समय और सी. सी. गार्सिया-फर्नांडीज (2019) ''स्लेट स्टोन में लेयरिंग की तन्य शक्ति में पर्यावरणीय सापेक्ष आर्द्रता का प्रभाव'' स्लेट एक प्राकृतिक पत्थर है जिसका व्यापक रूप से निर्माण के लिए उपयोग किया जाता है, जिसके लिए व्यावसायीकरण के लिए नियमों और मानकों के अधीन है। जहां तक पानी के प्रभाव पर विचार किया जाता है, केवल विस्तृत अध्ययन अनिवार्य है जब जल अवशोषण 0.60þ से अधिक हो। यह तकनीक सामग्री के आसपास के वातावरण और उसके छिद्रों पर हवा की सापेक्ष आर्द्रता को नियंत्रित करने की अनुमति देती है। परीक्षण के दौरान 55þ और 92þ के बीच सापेक्ष आर्द्रता लागू की गई और स्पेन के उत्तर से जलवायु डेटा को देखते हुए परिभाषित किया गया।

क. रबाती (2020)[6] ''वाष्प संतुलन तकनीक का उपयोग करते हुए पर्यावरणीय सापेक्ष आर्द्रता के कारण कैलकेरनाइट बिल्डिंग स्टोन्स के यांत्रिक कमजोर होने का मूल्यांकन'' पिछले अध्ययनों ने विभिन्न अवधियों के दौरान पानी में विसर्जन के बाद रॉक सामग्री के जल-कमजोर प्रभाव का मूल्यांकन किया है। तीन कैल्केरेनाइट निर्माण पत्थरों का। परिणामों ने संकेत दिया कि कैल्केरेनाइट्स के छिद्र नेटवर्क के अंदर पानी की मात्रा (डब्ल्यू) और संतृप्ति की डिग्री (सीनियर) के बावजूद सभी आरएच वातावरण (डब्ल्यू = 0.03-1.79þ और सीन = 0.2-35.6þ) के लिए अपेक्षाकृत कम थे, महत्वपूर्ण कमी यूसीएस (28.2- 34.7þ), एस्ट (20.0-31.3þ), बीटीएस (17.0-41.3þ) और आईएस (50)(23.9-37.6þ) पाए गए जब आरएच 10 से 93þ तक भिन्न होता है।

बारबरा बेंडर (2014)[6] ''लेस्कर्निक : स्टोन वर्ल्ड्स; वैकल्पिक आख्यान; नेस्टेड परिदृश्य'' लेस्कर्निक हिल, उत्तर-पश्चिम बोडमिन मूर, कॉर्नवाल पर केंद्रित एक चालू परियोजना बस्तियों को क्रमिक रूप से बनाया गया हो सकता है लेकिन प्रत्येक का लेआउट एक सुसंगत डिजाइन का पालन करता है जो उपयोग के एक सामान्य व्यापक चरण का सुझाव देता है। दक्षिणी बस्ती एक पत्थर मुक्त मैदान को देखती है जिसमें एक औपचारिक परिसर है।

एलन डब्ल्यू स्कॉट(2001)[4] ''यॉर्कशायर डेल्स नेशनल पार्क के भीतर स्टोन स्लेट छत की विशिष्टता और मरम्मत'' यॉर्कशायर डेल्स नेशनल पार्क के भीतर पत्थर की स्लेट की छत के विनिर्देश और मरम्मत से संबंधित है। प्रारंभ में छत के कार्यों के महत्व की जांच करता है और फिर पहुंच और सुरक्षा की प्रारंभिक वस्तुओं पर सलाह देता है। फिर पुनर्निर्धारण के तरीकों पर चर्चा की जाती है और विवरण की विशिष्ट तकनीकों पर विचार किया जाता है और उन्हें चित्रित किया जाता है। पत्थर की स्लेट की छतों का सर्वेक्षण पिछले पेपर का विषय रहा है।

नट हेल्स्कोगो (2010)[10] ''उत्तरी नॉर्वे के वारंगर में छोटे पाषाण युग का कालक्रम। दोबारा गौर'' उत्तरी नॉर्वे के वारंगर में छोटे पाषाण युग के कालक्रम का परीक्षण रेडियोकार्बन तिथियों के माध्यम से किया जाता है। पहले के कालक्रम की तुलना में लौकिक विचलन दिखाया गया है। ये 1975 के सिमोंसेन के कालक्रम के संबंध में बड़े हैं और हेलस्कोग 1974 के मामले में कम हैं। साइटों के बीच अधिकतम अस्थायी विचलन 3000 कैलेंड्रिक वर्ष है। छोटे पाषाण युग की शुरुआत को पहले से सुझाई गई विभिन्न सांस्कृतिक सामग्री पर परिभाषित किया गया है और 3400 से 4500 कैलेंडर वर्ष ईसा पूर्व में स्थानांतरित किया गया है।

एडम एन रोराबॉघ (2014) ''उत्तर पश्चिमी उत्तरी अमेरिका के सलीश सागर में चिप्ड स्टोन और ग्राउंड स्लेट पॉइंट्स के ब्लेड और हाफ़्टिंग तत्वों के बीच सामाजिक सांस्कृतिक संचरण में विविधता की खोज''। उत्तर पश्चिमी तट पर, पुरातत्वविदों ने पिछले 4,500 वर्षों में होने वाले सामाजिक संगठन में स्पष्ट बदलाव का दस्तावेजीकरण किया है। सामाजिक शिक्षा के लिए इस संक्रमण के प्रभावों का कम पता लगाया गया है।

क्रियाविधि

1. पिछले शोध अध्ययनों में सी. सी. गार्सिया-फर्नांडीज ने ''स्लेट स्टोन में लेयरिंग की तन्य शक्ति में पर्यावरणीय सापेक्ष आर्द्रता का प्रभाव'' पर अध्ययन किया स्लेट छत और फर्श के लिए व्यापक रूप से एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक पत्थर है। इस निर्माण सामग्री के आर्थिक हित, जिसमें स्पेन उत्पादन में विश्व में अग्रणी है, ने इस निर्माण सामग्री के स्थायित्व की गारंटी के लिए स्लेट मानकों को विकसित करने की आवश्यकता को जन्म दिया। तो, स्लेट को प्रमाणित करने के लिए बाजार पर उपयोग के लिए मुख्य मानक हैं और जो सामग्री के व्यावसायीकरण के लिए मांगे जाने वाले प्रारूप और तकनीकी गुण स्थापित करते हैं।

इस अर्थ में, हालांकि पत्थरों में विभिन्न अध्ययनों (मोमेनी एट अल। 2016(यवुज़ 2011) ने साबित किया है कि फ्रीज-थॉ चक्रों की संख्या में वृद्धि से, चट्टान की ताकत कम हो जाती है, स्लेट क्षेत्र में अध्ययन (कार्डेनेस एट अल। 2012ए) शो कि फ्रीज-पिघलना चक्रों के बाद सामग्री की ताकत

और उसके स्थायित्व व्यवहार के बीच संबंध स्पष्ट नहीं है, विश्लेषण की गई सामग्री की जटिलता को साबित करता है।

तालिका 1 : नमूनों का प्रारंभिक लक्षण वर्णन

सोल्डन	स्लेट
प्रारंभिक जल सामग्री, वाई (þ)	0.04
जल अवशोषण, डब्ल्यू (þ)	0.29
संतृप्ति पर पानी की मात्रा, डब्ल्यूएस (þ)	0.57
स्पष्ट शुष्क घनत्व, ρb (kg/©3)	2667
शून्य अनुपात (औसत मूल्य), ई	0.015
सरंध्रता, एन (þ)	1.47

पूरी तरह से शुष्क अवस्था से शुरू होकर, ठोस अंश के निरंतर द्रव्यमान पर विचार करके, मापे गए द्रव्यमान की वृद्धि सामग्री द्वारा अर्जित जल द्रव्यमान से मेल खाती है। पानी की मात्रा में वृद्धि को 0-0001 ग्राम सटीकता स्तर (छवि 3 सी) का उपयोग करके मापा गया था।

सापेक्ष आर्द्रता नियंत्रण के साथ ब्राजीलियाई विभाजन परीक्षण लेयरिंग के साथ एक्सफोलिएशन या डिटेचमेंट एक विफलता मोड है जो मुख्य रूप से कमजोर विमानों के बीच तन्य शक्ति या पालन द्वारा नियंत्रित होता है। इसलिए, नमूनों पर लागू सापेक्ष आर्द्रता के अनुरूप पानी की मात्रा के अनुसार तन्य शक्ति का निर्धारण करने के उद्देश्य से ब्राजील के परीक्षण किए गए थे। ब्राजीलियाई परीक्षण चट्टानों और कंक्रीट जैसी सामग्रियों में व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली प्रक्रिया है।

लवण का घोल	RH (%) at 25°C	Ψ (MPa) at 25°C
KNO_3	92	11
KCl	84	24
NaCl	75	39
प्रयोगशाला वातावरण	55	82

एक प्रकार की छत स्लेट में फोलिएशन विमानों की तन्यता ताकत पर सापेक्षिक आर्द्रता के प्रभाव की जांच की गई है। परिणाम बताते हैं कि यह ताकत दृढ़ता से पानी की मात्रा पर निर्भर करती है, जो पर्यावरणीय सापेक्ष आर्द्रता के साथ बातचीत से स्थापित होती है। एक अभिनव परीक्षण पद्धति जिसमें स्लेट जल सामग्री का प्रत्यक्ष नियंत्रण शामिल है और कुल चूषण के बाद के माप को डिजाइन किया गया था, साथ ही आरएच नियंत्रण के साथ फोलिएशन तन्य शक्ति का निर्धारण भी किया गया था। अध्ययन की गई आरएच श्रेणी को यथार्थवादी सापेक्ष आर्द्रता पर विचार करते हुए परिभाषित किया गया था।

2. पिछले शोध अध्ययनों में एन के एस्टारियनिक ने ''उमेनयार स्लेट के आधार पर जियोपॉलिमर बाइंडर का समय निर्धारित करना स्टोन पाउडर'' पर अध्ययन किया की कंक्रीट बनाने वाली सामग्री के रूप में पोर्टलैंड सीमेंट का उपयोग, इसके उत्पादन में, 1400C&1500C के तापमान को गर्म करने

के कारण बहुत बड़ी मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता होती है। सीमेंट बनाने वाली सामग्री में चूना पत्थर ($CaCO_3$), सिलिका रेत / मिट्टी (SiO_2 और Al_2O_3), और आयरन ऑक्साइड (Fe_2O_3) शामिल हैं। इन कच्चे माल को कार्बन डाइऑक्साइड गैस (CO_2) छोड़ने के लिए हीटिंग और कैल्सीनेशन के माध्यम से संसाधित किया जाता है जो वातावरण में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में मुख्य योगदानकर्ता है। जिसका अर्थ है कि हर साल लगभग 4 बिलियन टन CO_2 गैस वायुमंडल में छोड़ी गई है। CO_2 गैस उत्सर्जन के परिणाम जो काफी बड़े हैं और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं, कंक्रीट के निर्माण में सीमेंट के उपयोग को कम करने के लिए शमन कार्रवाई की जा सकती है।[11]

जियोपॉलिमर बाइंडर एक जियोसिंथेटिक बाइंडर है जो उन सामग्रियों का उपयोग करता है जो सीमेंट से प्राप्त नहीं होते हैं। जियोपॉलिमर शब्द पहली बार 1978 में डेविडोविट्स द्वारा पेश किया गया था, जिन्होंने फ्लाई ऐश और चावल की भूसी की राख के रूप में क्षारीय सक्रियकों और मुख्य अवयवों के बीच एक पोलीमराइजेशन बॉन्ड पाया। जियोपॉलीमर एक पोलीमराइजेशन प्रक्रिया के माध्यम से प्राकृतिक सामग्रियों का संश्लेषण है जहां जियोपॉलिमर सामग्री के निर्माण में मुख्य तत्व सिलिकॉन और एल्यूमीनियम तत्वों युक्त सामग्री हैं। सीमेंट के विकल्प के रूप में जियोपॉलिमर बाइंडर्स का निर्माण व्यापक रूप से किया गया है।[12]

सामग्री और विधि—इस अध्ययन में इस्तेमाल किया जाने वाला अग्रदूत उमेयार स्लेट स्टोन पाउडर (यूएसएसपी) था, जो 200 छलनी से गुजरता था। उमेनयार स्लेट स्टोन पाउडर से एक्सआरएफ परीक्षण के परिणाम चित्र 1 और तालिका 1 में दिखाए गए हैं। दो प्रकार के क्षारीय सक्रियकों का उपयोग किया जाता है, अर्थात् सोडियम सिलिकेट (Na_2SiO_3) और सोडियम हाइड्रॉक्साइड (NaOH) सोडियम हाइड्रॉक्साइड घोल ने 14 M- की एक मोलरिटी सांद्रता का उपयोग किया। जियोपॉलिमर बाइंडर को अग्रदूत और एक्टीवेटर (पी/ए) के 3 रूपों के साथ बनाया गया था जो 70þ : 30 थे; 75þ : 25þ; 80þ : 20þ। इस बीच, सोडियम सिलिकेट और सोडियम हाइड्रॉक्साइड उत्प्रेरक का अनुपात 1:1 है; 1.5:1; 2:1(तालिका 2)। नमूने के नमूने बाध्यकारी समय को मापने के लिए मानक के अनुसार बनाए गए थे।[13]

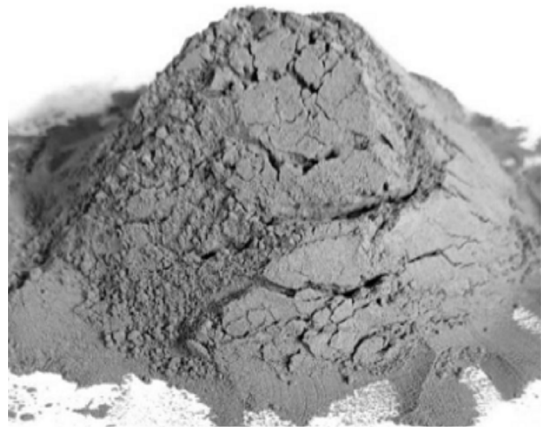

चित्र 2 : उमेयार स्लेट स्टोन पाउडर (यूएसएसपी)

उमेनयार स्लेट स्टोन पाउडर की तालिका 2 एक्सआरएफ परीक्षा परिणाम

यौगिक	प्रतिशत (%)
Al_2O_3	11
SiO_2	49
K_2O	3.37
CaO	11.2
TiO_2	2.06
$V2O_5$	0.03
MnO	0.55

तालिका 3 : मिश्रण अनुपात जियोपॉलिमर बाइंडर

समूह	कोड	पी/ए (जी)	अनुपात एसएस/एसएच
1	Y11	70%:30%	1:01
	Y12	70%:30%	1.5:1
	Y13	70%:30%	2:01
2	Y21	75%:25%	1:01
	Y22	75%:25%	1.5:1
	Y23	75%:25%	2:01
3	Y31	80%:20%	1:01
	Y32	80%:20%	1.5:1
	Y33	80%:20%	2:01

परिणामों और चर्चा से इस अध्ययन में कई बातों का निष्कर्ष निकाला जा सकता है, अर्थात् अग्रदूतों और सक्रियकर्ताओं (पी/ए) की संरचना और क्षारीय सक्रियकर्ताओं (एसएस/एसएच) का अनुपात उमेनयार स्लेट स्टोन पाउडर के आधार पर जियोपॉलिमर बाइंडरों के प्रारंभिक और अंतिम बंधन समय को प्रभावित कर सकता है। पी/ए अनुपात 70þ:30þ से 80þ:20þ जितना अधिक होगा, जियोपॉलिमर बाइंडर द्वारा आवश्यक बॉन्डिंग समय उतना ही कम होगा। अंतिम बाध्यकारी समय के लिए 173.33 मिनट और 271.67 मिनट के 70þ : 30þ (एसएस / एसएच = 1 : 1) के अनुपात में प्रारंभिक बाध्यकारी समय का मापन, इस बाध्यकारी समय का मूल्य 88.33 मिनट तक कम हो गया और 131, 67 मिनट 80þ:2þ अनुपात पर। इसी तरह, बाध्यकारी समय का मान एसएस/एसएच अनुपात 1.5:1 और 2:1 में घट गया।[14]

निष्कर्ष

इस अध्ययन मे हमने स्लेट पथर पे विश्लेषण किया की उमेनयार स्लेट पर आधारित जियोपॉलिमर बाइंडर्स का बाइंडिंग टाइम पाउडर में अल्कलाइन एक्टिवेटर्स (एसएस/एसएच) के अनुपात से प्रभावित हो सकता है। 2:1 के एसएस/एसएच अनुपात (पी/ए = 80þ:20þ) में सबसे कम बाध्यकारी समय था, जो प्रारंभिक बाध्यकारी समय के लिए 75 मिनट और अंतिम बाध्यकारी समय के लिए 25 मिनट तक था। मेटामॉर्फिक स्लेट की सापेक्ष आर्द्रता 0–10þ (आरएच = 92þ)

से भिन्न होती है, जिसका अर्थ है कि आरएच = 55þ होने पर पाए गए मान से तीन गुना कम। इस कमी का उपयोग रूफिंग स्लेट की सुभेद्यता के सटीक विश्लेषण में किया जा सकता है जब जल अंतरण गैस रूप (वाष्प) होता है।

ग्रंथ सूची

(1) ए. शाहरोखी, एम. एडेलिकाह, एम. इमानी, और टी. कोवाक्स, ''कशान, ईरान में एक खुले गड्ढे स्लेट खदान में विकिरण के लिए एक संक्षिप्त रेडियोलॉजिकल सर्वेक्षण और संबद्ध व्यावसायिक जोखिम'', जर्नल ऑफ रेडियोएनालिटिकल एंड न्यूक्लियर केमिस्ट्री, खंड 329, नहीं। 1. पीपी. 141–148, 2021, डीओआई: 10.1007/एस10967–021–07778–डब्ल्यू।

(2) I-N-S-vkSjI-B-R-W-K Astariani1*] I M A K Salain2 vkSj 1Doctoral] ÞAstariani&2021&IOP&Conf-&Ser-&&Earth&Environ-&Sci-&871&012002 (1)-pdfAÞ.

(3) ए. स्कॉट, ''एस10064–019–01619–7.पीडीएफ।'' 1996.

(4) और सी. टी.–2 बारबरा बेंडर 1 द्वारा, स्यू हैमिल्टन 2 और, ''एस0079497.00002413.पीडीएफ।'' 2015.

(5) ए. और डी. ए. ए. जी. ए. अलहरशन 1, 2, ''1.5080023.पीडीएफ।'' 2004.

(6) सी जे न्यग्रेन, ''00043079.2017.1265285.pdfAÞ'' 2017।

(7) N. KNUT HELSKOG Tromsø संग्रहालय, Tromsø विश्वविद्यालय, ''00293652.1980.9965329.pdfAÞ'' 1980.

(8) ए.डब्ल्यू. स्कॉट, ''02630800110384248.पीडीएफ।'' 2001.

(9) ए.एन. रोराबॉघ, ''ploring&Variation&in&Sociocultural&Tra-pdfAÞ''

(10) एम. सी. रबाटा, आर. टोमासा, ''enggeo-2020-105849.pdfAÞ'' 2020।

❑❑